टटका गप्प



टटका गप्प

[गल्प - संग्रह]

सम्पादक

प्रो० प्रबोध नारायण सिंह

प्रकाशक :—

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड,

१४बी०, ब्रजनाथ मित्तर लेन,

कलकत्ता-६

मुद्रक :—

श्री बाबू साहेब चौधरी,

मैथिली आर्ट प्रेस,

६/१, खेलात घोष लेन,

कलकत्ता-६

प्रथम संस्करण

जानकी नवमी, सम्वत् २०२१

मूल्य :—एक टाका पचीस नवका पैसा

आमुख

आइ मैथिली क मान्यता विषयक समस्या हमरा लोकनिक समक्ष बड़ विषम एवं विकट रूप धारण कएने अछि। विरोधी तत्त्वक आरोप अछि जे मैथिली मे बहुत कम ग्रन्थक प्रकाशन होइत अछि। मिथिला संघ, कलकत्ता क नेता लोकनि देशक प्रत्येक मैथिली-सेवी संस्था सँ अनुरोध कएने छलाह जे सम्प्रति अधिकाधिक ग्रन्थक प्रकाशन हो। तैं एहि पुस्तक क प्रकाशन-द्वारा 'मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड' सेहो अपन श्रद्धा-प्रसून क निवेदन कए रहल अछि। आशा अछि, मैथिली क श्रद्धालु पाठक हमरा लोकनि कें प्रोत्साहित करताह।

—श्री रामकृष्ण ठाकुर
मैनेजिंग डाइरेक्टर,
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

सूची

★

कोन महल नाम रखबै एकर ?

श्री काशीनाथ झा 'किरण'

'जेठक दुपहरिया भादवक राति। माघक भोरबा अभागल बहराथि!' एहि कहबी कें जनैत रहितहुँ विदा भेलहुँ ठीका-ठीक बारहे बजे! हँ, मास चैत छलै सेहो सुरूहे चैत! चैतक नाम सुनि साहित्यक मधुमय ऋतु मनमे नहि लायब। रौद खूब तीख रहै। पछबा धुरझाड़। कौशिकीक आङन! हिन्दी-उर्दू क आघात सँ विध्वस्तप्राय मिथिलाक संस्कृति ओ साहित्यक समान बाट! जन-कार्य्य बिभाग, जिला परिषद, क्यो ओकर रक्षक नहि बुझि पड़य। जनता अपन श्रम सँ ठाम-ठिम अस्तित्व रखने छलै। तें मैथिली-साहित्येक समान जीवित धरि छल। लोक कें ओहि सँ लाभ नहिए सन होइ छलै।

हकासल पिआसल, निछोह साइकिल चलौने जा रहल छलहुँ, मैथिली-साहित्यकारक समान। ने कतहु पोखरि-इनार, ने छाहरि ओ गाछ-वृक्ष! झौआ, कास, पटेड़, बंका जतेक

ली ! जंगली प्राणी मे बनगदहा आ' गिदरक दर्शन बेस होइ छल।

मन औआय लागल ! कतेक काल धरि स्थिर रहि सकैछ मनुष्यक मन, बिनु अन्न-पानिक ? बिनु स्वागत सत्कारक ? साहस विचलित होबय लागल ! परन्तु पुरुषत्व मन पाड़ि दैत छल, मैथिलीक साहित्यकार केँ !

यदि ओ सभ विनु लाभ-लोभक, विनु स्वागत समादरक, निर्धनताक ताप केँ तुच्छ बुझैत, अपन पथ पर अड़ले छथि आ' जीवन भरि अड़ले रहता तँ हम दश-बीस कोसक बाट केँ कियेक ने पार करब ?

काटि जाइ, एहि गुन-धुन मे कतेको दूर बाट ! किन्तु वास्तविकताक उपेक्षा करबाक सामर्थ्य ककरा छै ? विनु अन्न-पानिक, मन केँ अटल राखि सकैत अछि लोक, से सत्य परन्तु तकर संग इहो सत्य जे अन्न-पानिक अभाव मे देह सुखैबे करतै, अब्बल होयबे करतै आ' अन्त मे अकार्य्यक भए नष्टो भैए जेतै !

छाहरि ओ जलक विना शरीर शिथिल होबय लागल। आँखि बाट केँ छाड़ि, चारू दिशि गाछ केँ ताकै मे लागि गेल। कैक बेरि खसौ लागलहुँ। तथापि आँखि, बाट पर नहि आबय।

अनुमान पात्र भरि दूर मे, एक गाछक धूमिल चित्र आँखि मे पड़ितहि, बल जेना बढ़ि गेल। पायर दुगुन्ना वेग सँ साइ-किल चलबय लागल !

सांसारिक सुख केँ मिथ्या कहि, पंडित केहन ठकान ठकैत अछि लोक केँ ? गाछ, बाटक काते मे एक महार पर छल।

पोखरि तँ बौद्ध-धर्म्म जकाँ विलीन भय गेल रहै, केवल महारटा स्तूप समान ओहि पोखरिक अतीत वैभवक परिचय दय रहल छल।

गाछ छल आमक। नवगछुली। डेढ़ दू हाथ मोट। खूब झमटगर! पात, सभटा लाल, लालटेस, कोमल। लाल साड़ी पहिर ने निर्म्मल बालिकाक बीच मे प्रसन्न-मुख नव दुलहाक समान, कलसक बीच बीच मे मज्जर। अगणित मधुप कोबर गीत गबैत। बुझि पड़ल, समस्त कोशी क्षेत्र सँ विताड़ित वसन्त ओही गाछ पर निवास करैत छल।

गाछक चारूकात केँ ल' क' बेस चौखुट, भरि छाती ऊँच चिक्कनि माटिक चबुतरा! गोबर सँ नीपल! हरिअर। गाछक जड़िक लग मे एकटा धुपदानी आ' एकटा दिवारी राखल। जाहि सँ स्थानक पवित्रता मूर्त भय रहल छल। चबुतराक एक कोन पर चारिटा नबे नब घैल, जल सँ भरल रखने एक व्यक्ति बयसेँ युवक किन्तु शरीरेँ स्वास्थ्येँ जीर्ण, हृदये महान परन्तु परिच्छदेँ हीन—दीन, बैसल छल। हमरा देखितहि ओकर मुख जेना फुला उठलै। आँखि मे चमक आबि गेलै, परिचित-प्रेमी-बन्धु जकाँ चट आगाँ बढ़ि, हमर हाथ सँ साइ-किल लए, चबुतरा मे ओठङा देलकै आ हमरा हेतु पटेड़क पटिआ बिछा देलक।

मरुभूमि सँ सहसा वासन्ती सौन्दर्य्यक साम्राज्य मे पहुँचब, आशा-कल्पनातीत घटना भय गेल। ओहि आकस्मिक परि-वर्तनक प्रभाव केँ, ने शरीरे सम्हारि सकल, ने मने। चट पड़ि

रहलहुँ हम पटिआ पर। आँखि ओहि तरुण गाछक सौन्दर्य्य केँ स्मृति मे दृढ़ रूपेँ अंकित करैक लेल बन्द भय गेल।

युवक हमर पायर केँ कोमल हाथेँ खूब जल द' द' धो देलक। शरीरक गर्मी जेना चल गेल। आँखि खोलल तँ देखैछी युवक बीअनि घुमा रहल अछि हमर माथ पर। आ' माँजल लोटा मे जल भरल लग मे राखल अछि। बैसि भरि छाक जल पीलहुँ आ' ओठङि गेलहुँ गाछ मे।

हमरा भेल क्यो लक्ष्मी-पात्र व्यक्ति, ओहि मरु-भूमि मे जलक व्यवस्था केने छथि, परन्तु से छल नहि। ओ महा पुरुष जे हमर पायर धोने छल, स्वयं छल ओहि प्राण-निकेतनक कवि!

दिन झुकि गेल छए, जैबाक छल दूर। तेँ विदा भय गेलहुँ मुदा मन केँ छोड़नहि। तेँ घुरती बेरि कृत्रिम क' क' दशे बजे पहुँचि गेलहुँ। ओ महापुरुष पूर्ववत मानव-पूजाक लेल प्रस्तुत छल। हँ, हम पूर्ववत नहि रहि गेलहुँ। भेष-भूखा केँ पैघक आधार मानबाक कुसंस्कार सँ पहिल दिन हम ओकरा कोनो धनी व्यक्तिक नोकर मानि लेने छलिऐ ताहि सँ आत्मा लज्जित भए आँखि खोलने छल। प्रच्छन्न महा मानवताक परिचय पाबि गेल रही। अतः सतर्क भय गेल छलहुँ। कतेक व्यक्ति ओहि गाछतर जिरायल-सुस्तायल छल। लोटाक लोटा जल ढकोसने छल। परन्तु हमर जकाँ, प्रायः क्यो कौतुहल नहि देखौने छलै ओकरा लग। ओकर मानव पूजाक सम्बन्ध मे! ओहि गाछक सम्बन्ध मे! तेँ हमरा अपन पूर्व जन्मक बन्धु मानि लेलक आ तेँ अपन जीवन कथा कहि देलक एके अध्याय मे।

दश-बारह वर्ष पूर्व ओकर दुरागमन भेलै। ता' कोशी आबि गेल छलथिन। हुनक लोक-संहार-लीला आरम्भ भय गेल छलनि। माय-बाप दूनू गोटे तीन दिनक भितरे मरि गेलथिन, ओही साल।

दुनू बेक्ती टा रहल आङन मे! दोसर क्यो छलैके नहि, तेँ दुनू गोटेक जीवन-सम्बन्ध निर्बाध रूपेँ एक होइत गेलै।

स्त्रीक नाम छलै सिनुरी। स्वभाव अत्यन्त कोमल, सरल, पवित्र तथा मधुर! कौशिकीक बाढ़ि, अन्न-वस्त्रक कष्ट जेना दुनू व्यक्तिक प्रेम केँ दृढ़े करैत गेलै। ओतबे वयस मे ओ संग-समाजक मायक स्थान पाबि गेलि छलि। बेर-विपत्ति, रोगीक पथ-पानि सेवा सुश्रुखा, टोल मे ककरो नहि खगय दै। बड़ मधुर जीवन जा रहल छलै दुनू बेक्तिक।

तीन वर्ष बाद! भादव मास। सौंसे गाम जल-मग्न भय गेल। घरे-आङने पानि ढुकल छलै। एक ओ मोहार टा जागल रहलै।

लोक सभ पड़ा' क' कि तेँ आन गाम चलि गेल ने त ओही महार पर डेरा देलक। ओकरो डेरा ओही महार छलै।

नीचा जवका। उपर सँ बरखा। दुखित पड़ि गेलै सिनुरी! दवादारूक कोनो उपाय छलैके नहि। चलि गेलै ओकरा एक-सरे छाड़ि, एहि संसार सँ! कतौ दोसर भूमि जागले ने छलै। जारनि अलभ्य। मुखबत्ती लगा' क' गाड़ि देलक ओ अपन सिनुरी केँ ओहीठाम।

धिया पुता भेले ने छलै। मेटा जैतै ओकर नाम! तेँ ओकर स्मारक, ओकरे सारा पर, मधुर सिनुरिआ आमक गाछ

रोपि देलकै। सयह छल ओ गाछ! ओकर विगलित स्वर मे, डबडबायल आँखि मे असंख्य अजविलाप काव्य विलीन भय रहल छल!

गामे ऐबाक छल। पक्ष इजोरियाए छलै! भरिपोख गप्प केलहुँ, सुस्तेलहुँ, सुतलहुँ, ओहि मातृ-हृदया-नारीक चरण लग! साँझक स्वर्णिम किरण मे गाछ केँ बारंवार देखलहुँ। आ' अतृप्त नयनेँ, उद्वेलित हृदयेँ विदा होयबाक उपक्रम केलहुँ तँ ओ महापुरुष दौड़ि क' अपन गोहिया सँ, जे गाछक लगे मे छलै, एक सरबा मे अँकुरी आनि देलक। हम ओकरा प्रसाद मानि सहर्ष खा' लेलहुँ। भरि छाक जल पीबि लेलहुँ आ मने मन प्रणाम आ उपर उपर हाथ जोड़ि नमस्कारक अभिनय कय विदा भय गेलहुँ।

आँखि बाट केँ तकैत छल, परन्तु मन खनहि ओहि गाछक लग खनहि आगराक 'ताजमहल' लग पहुँचय लागल!

कतेक काव्य बनल अछि ताजमहल पर? कतेक तथा-कथित सहृदय कविकलाकार ताजमहल केँ देखय जाइत छथि आ शाहजहाँक प्रेमक प्रशंसाक गीत गबैत छथि?

परन्तु ताजमहल थीक की? शाहजहाँक प्रेमक प्रतीक कि हुनक वैभव प्रभुत्वक प्रतीक? कोन कृतित्व अछि ताजमहल मे, शाहजहाँक? नकसा वास्तुकलाविदक! रूरि निर्म्माण-कर्ताक! परिश्रम मजूरक! आ' धन, जनताक!

जाहि प्रेम केँ हम सब पवित्र कहै छिऐ, से मानवेटाक हृदय वस्तु थिकै! लाखों लोकक खून, शोषण, अपमान, गज्जन

पर जकर महत्ता निर्भर छल ताहि शाहजहाँ-मुमताजक हृदय मानवक हृदय रहल कहिया ? भेलै कहिया ? शाहजहाँ मुमताजक प्रेम कें पवित्र हेबाक अवसर कहां भेटलैक ? पाषाण हृदय द्वारा पाषाण हृदयाक स्मारक पाषाणेक त भेलै कि ने ?

मुमताजक वाह्य सौन्दर्य्य छल शाहजहांक प्रेमक आलम्बन, आ प्रेमो छल वाह्य सुन्दरे। तें ताजमहलक विलक्षणतो तँ अछि बाह्य सुन्दरते !

आ' आइ जे स्मारक देखलहुँ से ? देखितहिं बुझि जेबं जे स्मारक बनौनिहार क हृदय मानवक थिकै, सिनुरीक शरीरक सुन्दरता नहि, ओकर हृदयक असीम मातृत्व, अपार मानव-कल्याण-भावना छलैक प्रेमक आधार ! पवित्र-प्रेमक पयोधि अछि स्मारक निर्माताक हृदय मे।

. तें एहन, सुन्दर, सजीव लोक कल्याणकर स्मारक भेलै कि ने ?

एकर निर्म्माण वैभव-प्रभुत्व सँ नहि, वेदनाक बल सँ भेल छै ! तें रामायण काव्यहुँ सँ सुन्दर अछि, कि ने ?

'ताजमहल' कोजागराक राति मे सभ सँ सुन्दर अछि, परन्तु एकर सौन्दर्य्य ग्रीष्मऋतुक दुपहरिया मे मधुरतम बनि जाइछ। शिशिर वर्षा कोनो ऋतु एकर सुखद सौन्दर्य्य कें घटा नहि सकैछ। शाहजहां अपन महल सँ निर्निमेष नयने ताजमहल कें देखैत रहैत छला !

आ' ई महामानव ! गाछक तर मे रहि, रौद बसात सँ पीड़ित असहाय मानव कें जीवन-दान देबक लेल आकुल नयनें चारू दिसि ताकैत रहैछ !

मुमताजक शरीर ताजमहल मे गड़ल सड़ैत सुखाइत पड़ल रहि गेल। परन्तु "सिनुरी"क शरीरक अणु-अणु अपन स्मारकक शरीर मे प्रवाहित भए ओहि मे सिन्दुरीक मधुर गुण भरि रहल छै।

तें ने ओकर स्मारक बच्चा जकां अपन कान्त किसलयक लालिमा-हरीतिमा सँ मानवक नयन कें जुड़बैत किशोरी जकां मंजरक मनोहर मादक सुगन्धि सँ लोक कें मुग्ध कय दैछ, दिशा कें आमोदित कय दैछ, आ' मधुप-बालमण्डल कें मधु चटबैत अछि।

ओ दूनू

"मणिपद्म"

रेखा बहुत अधिक व्यथित भ उठलीह्। सांचे युग सन सन चारि मास बीत गेल। हुनक प्रवासी पति एक्को पाँती नहि पठौलथिन्ह्। सोभ्हांक सिम्मर फूल से लाले लाल भ गेल छलैक आ पीपर खूब चमकैत चिक्कन आ कोमल पातक नव वस्त्र पहिर नेने छल। चारूकात घर आ छहरदिवारी। घर सँ आंगन आ आंगन सँ घर। हुनका आंखि मे रहि रहि कै नोर छलछला आबैन्ह्। "ह ह; उपेक्षाक हद भ गेल। हुनका मोन मे मौनिक पानि जकाँ ई बात चक्कर काटैन्ह्।

प्रिय जनक चिताक काल मे सबटा अशुभे बात मोन मे उचरैत रहैत छैक।

"भ सकैत छैक ओ ककरो प्रेमपाश मे पड़ि गेल होथि। संसार मे एक सँ एक सुन्नरि होति अछि आ नटिनियां सब छवियो छटा तेहने बनौने रहैत अछि जे पुरुख देखितइ लोटि खसय।"

कखनो-कखनो ओ सोचै लागथि—"तखन दिन गुजर कोना चलत ? कमाइ त कहुना होइते हेतैन्ह। सेहो पाइ पैसा पठोनाइ बन्न केने छथि। आ जौं जीवन भरि लेल छोड़िये दैथि ! पुरूख क कोन ठेकान !"

ओ आंगन मे बैसलि आकाश दिस ताकय लगलीह। माथ क उपर दलक दल पक्षी उड़ैत चल जाति छल।

"कोनो रोक टोक नहि। जतै मोन होति छैक ततै जाति अछि।" ओ अपना मोन मे कहलैन्ह।

चिंता, उद्विग्नता आ व्यथा जेना हुनका बिहारि मे ठाढ़ सिंगरहारक गाछ जकां मोचरने जाति छलैन्ह।

"मालिकिनी, कड़हड़ लेबैक।" ड्योढ़ी पर सँ क्यो कहलकैन्ह।

रेखा अपना व्यथा कें बिसरइ लेल कहलथिन्ह—"देखियौ, केहेन छौक कड़हड़ ?"

एकटा मुसहर ललना माथ पर एकटा पैघ ढाकी नेने आंगन आयल आ अनायासे माथ पर सँ कड़हड़ क ढाकी उतारि कै नीचा मे राखि लेलक।

सुगठित देह। माँगुर माछ सन छह छह करैत रक्ताभ कारी रंग। पुरनिक पात सन चिक्कन मुँह घोंघारी सन सन छोट छोट आँखि आ पट राखल खुरचन सनक नाक। गरदनि मे दू छर करजनीक माला। असाधारण रूप सँ चमचम करैत दंत-पंक्ति। उरोज तेहेन पुष्ट आ दृढ़ जेना भौंरा पाथर कें कुनि कै बनाओल गेल हो।

रेखा एक बेर अपना पिरोन शरीर दिस तकलैन्ह आ एक बेर ओकरा दिस। बयस क समता रहितौ स्वास्थ्य मे कते अन्तर छल ? रेखा छली खूब यत्नपूर्वक राखल ओ पटा-ओल, गमला क पिलपिलाइत करोटन जकाँ क्षीण आ अम्लान आ ओ कड़हड़ वाली छलि इंटा-भट्टा पर क भुअरगर पीपर क गछुली जकाँ, बिना पटौनइ लहलह करैत, बिना यत्नै क मस्ती सँ झूमैत।

रेखा कें ओकरा देखितइ जेना ठकमुड़िया लागि गेलैन्ह।

"देखू एकर सुन्नरताइ। के कहैत अछि जे गोरे चामटा सुन्नर होति छैक। सब सँ बड़का सुन्नरताइ छिऐक स्वास्थ्य। एकटा छी हम सब। खोआ खाय से गलल जाय। हरदम झखौनिये नेने रहैत अछि।" ओ मोनइ मोन कहलैन्ह।

'गिरहथनी, हालि सनी लेबइ त लिऔ।" कड़हड़वाली कहलकैक।

"हइ एक रत्ती बैसबो कर।" रेखा मुस्कुराइक प्रयत्न कैलन्हि—"घरवाला बिना एक्को घड़ी नइ रहल जाइ छौ की ? हरदम त संगइ रहैत छैं, गाछी, बिरछी, चर, चांचर आ खेत मे त घरा जोड़ी केनइ रहैत छैं।"

कड़हड़वाली भभा कै हँसि पड़लि "गां मे नइ छइ मालि-किनी। कमाइ लै पूब गेलइ ग।"

रेखा हँसली—"बैस बैस। बैसमे त हम दू सेर कड़हड़ लेल दू सेर मड़ुआ देबौ।"

कड़हड़ वाली भूँइयाँ पर बैसि गेलि। "ऍं गे, साड़ी देखइ

छियौ लाल। घरबाला पूव सँ पठा देलकौ की ?" रेखा पुछलथिन्ह।

"अपने छागर बिकायल छल तकरे किनलौं।' कड़हड़-वाली क उत्तर मे मस्ती छल।

"की ना छियौ ?" पुनः प्रश्न कैल गेल ?

"करजनी" उत्तर भेटलैन्ह।

"घरवला कें पूव गेना कत्ते दिन भेलउ ? समाद वारी आवइ छौ की नहि ?" रेखा क प्रश्न मे उत्सुकता छल।

"बहुत दिन। कमला मे पहिले बाढ़ि ऐल छलइ त गेलइ।" करजनी क आंखि चमकि उठलइ।

"ऐं गइ; त दिन गुजर कोना चलइ छौ ?" रेखा विस्मित स्वर मे पुछलथिन्ह।

"हमरा की लुल्ही लागि गेल अछि ग ? कन साग बेचि कै गुजर करइ छी ग। धान कटलौं ग। खुभी जमा कै बेचलौं ग। चून वाली कें डोका देलियै ग।" ओ मस्ती सँ बाजल।

"से त भेलउ।" रेखा खौंझा उठली—"घरवला कखनउ मोन नइ पड़इ छौ की ?"

"मोन कियै ने पड़इ छइ। काजक पाछू तत्ते बेहाल रहइ छियै जे मोन पड़ैक छुट्टिये ने रहइ छइ। कहियो कहियो एसगर दोसगर मे चुपे चुपे कननी लागि जाइ छइ ग।" करजनी कनिये अम्लान भ उठल।

करजनी क अम्लान भेनाइ रेखा कें जेना अधिक सुखद बूझि पड़लैन्ह। हुनका मन मे ओकरा प्रति एकटा अज्ञात ईर्ष्या अंकुरित भै आयल छलैन्ह।

"आ जौं तोहर घर-वला कोनो तोरउ सँ नीक मौगी कें राखि लौ आ तोरा छोड़ि दौ ? घुरि कें घर नइ अबौ, कहियो ने खोज करउ तखन की करमे ?" ओ ओकरा कलेजा मे बाण मारैक प्रयत्न केलथिन्ह ।

मुदा हुनकर बाण एकदम विफल गेलैन्ह । करजनी भभा कै हँसि पड़ल —"क ने लै होइ छइ ग । आ पांचे टा ल आनत त हम की करबै ग । अपन समांग रहल ताकइ ग । मरद क भरोस कै दिन राखबइ ग ?

रेखा क्षुब्ध भ उठली—"ऐं गइ, त साफ कहइ ने जे दोसर पुरुख कै लेबहिन ।"

"मालिकिन ठट्ठा करइ छियै ग ? जा तक पुरुख जानि समानि आ मारि पीट कै नइ निकालि देतइ ता तक अपनइ दोसर पुरुख कोना करबइ ग ? आ ओ नइ राखै चाहतइ त गोड़मुड़िआ ध क रहबो ने करबइ ग ।" करजनी क स्वर मे जेना अनायासे दृढ़ता आबि गेलैक ।

"जौं तोरा घरवला कें समाद बारी दइ मे, की गां आबइ मे विलम होइ छइ त तोरा मोन मे नइ ठेहकइ छौ जे ओ कोनो आन मौगी कें त ने ध लेलक ।" रेखा स्वर कें संयत रखैक प्रयत्न कैलैन्हि, मुदा मुद्रा कननमुँह भ उठलैन्ह ।

करजनी क दंतपंक्ति चमकि उठलैक आ आंखि ओ कपोल पर जेना नववधू क लाज खेलि गेलैक—"हमर हेतइ त कतउ ने जेतइ ग मालिकिनी । अपनइ मोन मे पाप कियै राखबइ ग । हमरे दू कर अन्न की दू हाथ बस्तर लेल त रने-वने कमाइ लै

गेलइ ग। गां आवइ लेल त ओ पानि विनु माछ जकां छट-पट करैत हेतइ ग आ तैपर हमही मोन मे ओकरा पर भरमो करबइ ग त कतै भ क रहबइ ग ?"

ओकर आत्मविश्वास जेना रेखा कें छूबइत बूझि पड़लैन्ह। हुनक विषाद जेना धोखैर गेलैन्ह आ मन निरभ्र आकाश जकाँ निर्मल भ गेलैन्ह।

"आ; कड़हड़ दे।" ओ कहलथिन्ह—"मड़ुआ देबउ बरोबरि कै आ इनाम मे एकटा पुरान साड़ियो देबउ।"

"करजनी नीक नीक कड़हड़ बहार करै लागल आ रेखा मड़ुआ आ साड़ी आनइ लेल हलसल फुलसल घर गेली।

—:o:—

पुरान पत्र आ टटका बात

श्री रामकृष्ण झा 'किसुन'

प्रिय विनय,

हम स्वयं अपना मन सँ ई प्रश्न करैत छी जे कहिया धरि ई बतहपनी करैत रहब ? मुदा...मुदा उत्तर किछु नहि भेटैत अछि। कहि नहि, जीवन भरि एहि सर्वग्रासी बतहपनीक चक्कर सँ उबरि सकब वा नहि !

हाल मे फेर एक दिन एक घटना भऽ गेल अछि। ओहि दिनक बात थिक। मानसी स्टेशन पर पटनाक हेतु ट्रेनक प्रतीक्षा मे अपना मीतक सङ मुसाफिर-खाना मे 'होल्ड आल' ओछा कऽ पड़ैत छलहुँ कि सोझाँ मे देखै छी जे एक परिवार कोन मे बैसल अछि। एक सम्भ्रान्त महिला, एक नववधू आ एक कुमारि कन्या जे भरिसक अपना केँ चिन्हबा-बुझबाक अभिशाप वा वरदान जे कही दुहू सँ अपरिचित छलि। एक बदमास छौंड़ा, जे अपना बदमासी सँ माय केँ तंग कऽ रहल छल। लगे मे बैसल एक वयस्क पुरुष, जे अपना शून्य आ

भावहीन आँखि सँ लोकक आवागमन कें अन्यमनस्क जकाँ देखि रहल छलाह। हम कने विश्राम करऽक विचारें ओछाओन पर बैसबे कयलहुँ कि देखलहुँ जे ओ कन्या टकटकी लगा कऽ हमरे दिस ताकि रहल अछि। हम, जे मनहिमन ई चाहि रहलि छलहुँ, ई देखि कऽ प्रसन्न होयबाक बदला खौंझा उठलहुँ। मन मे भेल जे ई प्रायः नीक नहि कऽ रहलि अछि। एकरा एना नहि करऽ क चाही। शील नामक पदार्थ तँ किछु थिक!...आ कि देखलहुँ जे मीत अपना सर्वान्तःकरण सँ ओकरा आँखिये दऽ कऽ गीड़ि जयबाक इच्छा कऽ रहल छथि।

मुदा की ई पुरुषक—आजुक युवक समुदायक सभ सँ पैघ निर्लज्जता नहि थिक? की ई उचित थिक? समाजक लेल, नैतिकताक लेल, चरित्रक लेल आ सभसँ बढ़ि कऽ मनुष्यताक लेल ई कतेक कलंकक बात थिक? हमरालोकनि सामाजिक प्राणी थिकहुँ। समाजे सँ अपने सभ बनैत छी आ अपने सभ सँ समाज बनैत अछि। अपन उत्पादनक धरातल कें विकृत कऽ की क्यो आगाँ बढ़ि सकैत अछि? मनुष्य जानि-बूझि कऽ अपना पर बंधनक नियंत्रण लेने अछि। बंधन; ह ह, हम एकरा बंधने मानैत छिऐक। मुदा ई ओकर शांन्तिक हेतु आर प्रजनन शक्ति कें जीवित राखक हेतु आवश्यक अछि—अनिवार्य अछि। मनुष्य बर्बर युग कें पार कऽ सभ्य आ सभ्यताक उपासक बनल आगाँ बढ़ल जा रहल अछि। किन्तु, विनय, हम पुछैत छियह जे अपन उद्दाम वासनाक शिकार बनल, अपना चारू कात कलुष ओ अविश्वासक वातावरण पसारि कऽ की सरिपहु सभ्यताक आडम्बर रचि कऽ आदिम युगक

असभ्य आ जंगली मनुष्य हमरा लोकनि नहि बनल जा रहल छी ? डारविनक अनुसार जऽ सँ विकास भेल छल, की पुनः ताही दिस मनुष्य प्रत्यावर्तित नहि भऽ रहल अछि ?

मीत दिस तकलहुँ तँ देखलहुँ जे ओ किछु अपूर्व मुद्रा सँ विहुसि रहलाह अछि। हमर आँखि अनचोके ओहि कन्या दिस गेल त ओकरा आँखि सँ टकरा गेल। ओ तत्क्षण लाल भऽ उठलि। हमर मन कोना-कोना दन भऽ उठल आ चोट्टहि अपन आँखि खसा लेलहुँ। पढ़ि कऽ एक पुस्तक बहार कयलहुँ आ पढ़-बाक बड्ड चेष्टा मे भिड़ि गेलहुँ। मुदा ओ चेष्टा व्यर्थे नहि, विकृत भऽ गेल। तकरा बाद जँ भगवान फूसि नहि बजाबथि, ओही अवचेतन रूपेँ ओकरा दिस तकलहुँ, एक बेर दू बेर आ एहि तरहेँ अनेक बेर।

एहि बीच मे हमरा अनुभव भेल जे ओ किछु सशंकित अछि—भयभीत अछि। ओकर आँखिक लालसा स्पष्टतः कहि रहल छलैक जे ओ एखन आओर जीबऽ चाहैत अछि, मुदा जेना बलि-वेदीक खड्ग माँजि मूँजि कऽ साफ कयल जा रहल अछि आ ओ डूबल जा रहल अछि निराशाक अनन्त अपरिचित ओ अथाह सागर मे।

प्रिय बन्धु, तोरा भेँटे भेला पर सभ बात खोलि कऽ कहि सकबह। लिखबा मे सभ बात नहि आबि पबैत अछि। संक्षेप मे गाड़ीक एके डिब्बा मे अकस्मात् चढ़ि गेला पर गप्प-सप्पक क्रम मे ज्ञात भेल जे एहि कन्याक नाम थिकैक नमिता

आ ओ पुरुष नमिताक पित्ती थिकथिन। गया मे नमिताक पिता नोकरी करैत छथिन। किछु काज छनि तेँ ई लोकनि पटना होइत गया जा रहल छथि। काज ई जे नमिता दाइक विवाह पटनाक सचिवालयक कोनो पैंतीस वर्षक बयसाहु किरानीजी सँ होमऽबला छनि। एहन किरानीजी सँ जे एहि सँ पहिने एक पत्नीक स्वर्गपन सँ विधुर भऽ चुकलाह अछि आ से हुनके कन्या देखयबाक योजना छैक। व्यवस्थाक टाका पर्याप्त नहि दऽ सकबाक कारणेँ हाड़ि कऽ एना करऽ पड़ि रहल छनि। पटना सँ ई काज कऽ लेलाक बाद ई लोकनि गया जाइ जयताह।

तऽरे-तऽर सभक नजरि बचा कऽ हम नमिता दिस तकलहुँ तँ देखबा मे आयल जे ओ पीयर-पीयर सन भेलि हमरा दिस जेना सहायता चाहैत जकाँ अद्भुत याचनापूर्ण दृष्टि सँ बड़े करुण आ दयनीय रूपें देखि रहल छथि।

——"तँ की विवाहक सभ निश्चय भऽ गेल अछि आ ओहि किरानियेजी सँ विवाह होयब आवश्यक अछि?" कनेँ प्रगल्भ मुद्रा मे तटस्थभावेँ हम पुछलियनि।—"की कहलहुँ?" भद्र पुरुष, नमिता दाइक पित्ती, अर्थपूर्ण दृष्टि सँ हमरा पर कने तमसायल जकाँ प्रश्नक उत्तर प्रश्ने मे देलनि?

—"कहलहु जे किछु अवस्था बेसी बूझि पड़ैत अछि।" —हम कहलियनि।

—"अहाँ की करैत छी?" अकस्मात् ओ सोझे प्रश्न कऽ देलनि।

—"जी, हम ?"—नमिता दिस देखैत, जे विस्फारित नेत्रें हमरा भीजल पिपनी सँ करुणा बरिसबैत देखि रहल छलीह, हम कहलियनि—"हम तँ पटना मे पढ़ि रहल छी। एम० ए० फाइनल थिक एहि वर्ष।"

देखलहुँ जे नमिता दाइक हृदय हुनका आँखि मे हेलि रहल अछि आ ओ जेना किछु माङि रहल छथि।

हमर पता-ठेकान आ परिचय पात पुछलाक बाद ओ पुनः एक बेर जेना हमर 'सर्वे' करैत सम्पूर्ण शरीर केँ परीक्षाक दृष्टि सँ देखि कऽ पुछलनि —"विवाहक संबंध मे अहाँक की विचार अछि सुधीर बाबू ?"—"जी ?"—हम कनेँ लजाइत सन कहलियनि—"एखन तँ नहि भेल अछि।"

देखलहुँ जेना नमिता विकसित भऽ उठलीह। कहलियनि आ एखन करबोक विचार नहि अछि (नमिता जेना मुरझाय लगलीह)। हमर अभिप्राय जे (नमिता जेना फेर किछु माङि रहल छलीह) अवसर अयलापर देखल जयतैक (नमिता मादक स्मितिक सङ अनुनय अनुरोध, एकान्त विश्वास, अनन्य आशा, सभ किछु एक्के सङ देने जा रहल छलीह जे—अहाँ हमरा उबारि लियऽ ने।)

कहि नहि, किएक नमिताक पित्ती विहुँसि कऽ हमरा दिस वात्सल्य भाव आ सतृष्ण दृष्टियेँ देखऽ लगलाह। शेष बात दोसरा पत्र मे।

पटना
१८-३-१९५२

तोहर अंतरंग,
सुधीर

(बीचक पत्र नहि भेटल। एक आरो पत्र एहि प्रकारक छल।)

प्रिय विनय,

आइ बहुत दिनक बाद एक अपरिचित लिपिबला लिफाफ खोलला पर नमिता दाइक छोट भाइक टेढ़-दूढ़ अक्षर मे पत्र भेटल जे हमरा बाबूजी आ नमिताक पिता मे सौदा नहि पटलनि। ओतेक टाका नमिताक पिता नहि दऽ सकलथिन आ हमर बाबूजी नहि पाबि सकलाह। आ एहि तरहें नमिताक विश्वास टूटि गेलनि आ हमर हृदय टूटि गेल...आ की टाका-पैसाक ई सर्वग्रासी दानव एही तरहें सभ कें तोड़ि-फोड़ि कऽ अनेक हृदय कें खा कऽ ढेकरैत रहत?...आ की आइ विद्रोहक सभ सँ पैघ आवश्यकता नहि अछि?.. की समाजक एहि भयंकर कंकाल कें खण्ड-पखण्ड नहि कयल जयतैक? एहि फूसि आ आडम्बर सँ भरल एहि कृत्रिम जीवन कें समाप्त कऽ देब अनिवार्य नहि भऽ गेल अछि? आ बंधन......? बंधन वा व्यवस्था जे मानव-सभ्यताक सहायक छल, आब मनुष्यता कें जकड़ि कऽ निर्जीव—निष्प्राण नहि कऽ रहल अछि? हम ई सभ नहि होमऽ देबैक, विद्रोह करबैक आ तोड़ि-फोड़ि देबैक एकरा। अपना हृदय मे ज्वालामुखी लेने नमिताक लेल, अपन नमिताक लेल हम विद्रोह करब। सोचि रहल छी जे की ई एके नमिताक प्रश्न थिकैक? की आइ हजारो-हजार नमिता सभक जीवन पर ई पहाड़ नहि ढहि रहल छैक? की समाजक एहि पद्धति कें बदलबाक हेतु, टाका-व्यवस्थाक एहि दुर्दान्त राक्षसक दाँत तोड़बाक हेतु प्रत्येक युवक कें विद्रोह नहि करक चाही? ई अवश्य जे

किछु व्यक्ति एना करबाक प्रयास कयलनि अछि। मुदा ओ अपवादे थिक। मात्र अपवाद सँ आब काज नहि चलतैक। व्यवस्थाक सुरसा मुँह पसारनहि जा रहल अछि। काटरक टाकाक डाक बढ़िते जा रहल अछि। सभ जाति मे सभ समाज मे भयंकर रूपेँ ई धुधुआ रहल अछि। तेँ सभ जाति आ वर्गमे आब अपवाद नहि, नियम चाही। हम एहि रचनात्मक आन्दोलनक लेल नमिताक सहयोग पयबाक हेतु गया जा रहल छी। शेष दोसर पत्र मे। तोहर स्नेह, सहयोग ओ सङ्गक अटूट विश्वास अछि।

पटना
३-७-१९५२

तोरे,
सुधीर

(ई दुहू पत्र हमरा ओहि मकानक एक कोन मे भेटल जकरा छोड़िकऽ एक सज्जन दोसरा शहर चल गेलाह अछि आ हम जाहि मे आइ अयलहुँ अछि)।

नरक

प्रो० श्री शैलेन्द्र मोहन झा, एम० ए०

सुकान्त केँ लगलनि जेना क्यो चाह मे चिरैता घोरि देने हो। फेर पीबाक जी नहि कयलकनि। कप केँ नीचा राखि अन्यमनस्क भऽ गेलाह।

एक बेर पत्नी दिस तकबाक इच्छा भेलनि। परन्तु आँखि ओतऽ स्थिर नहि रहलनि। सुन्दर चेहरा तामसेँ कोना दन लगैत छलनि।

ओ खिड़की सँ बाहर दिस ताकऽ लगलाह। पछुअतिक गाछी मे क्यो जारनि तोड़ि रहल छल। सुकान्त नीक जकाँ देखलथिन, ओहि गाछ पर चढ़ल युवक केँ, जे सुखायल जारनि तोड़ि-तोड़ि खसबैत छल आ नीचा मे ओकर पत्नी बीछि रहल छलैक।

सुकान्त बेशी काल एहि दुनू केँ एहि गाछी मे जारनि तोड़ैत-बिछैत देखैत छथि। आइयो ओ एहि दूनू केँ देखैत रहलाह। मनमे नहि कहि, कतेक तरहक बात-बिचार उठैत-मेटाइत रहलनि।

फेर सुकान्तक मन कोठली मे घूमि अयलनि। वैह निस्तब्धता छल। पत्नी तखनहुँ ओतहि ठाढ़ि छलीह। तामस सँ चेहरा पहिनहि सन छलनि ...

पत्नी अस्फुट स्वर मे बजलीह--'एना जे रहय से बियाह नहि करय, परिवार नहि बसाबय, धिया-पूता नहि जन्माब ....'

सुकान्त जेना अपन गलती स्वीकार कऽ लेलथिन—'हँ! एहि लेल हमरा पर्याप्त खेद अछि। अगिला जन्म मे तँ हम बियाहक बात सपनो मे नहि सोचब।'

परन्तु पत्नी केँ लगलनि जे हुनक बात केँ उपहास मे उड़ाओल जा रहल अछि। व्यंग्य सँ बजलीह—'परन्तु एहि जन्मक की होयतैक? क्यो एहि जन्मक पहिने फैसला कऽ लेअय तखन दोसर जन्मक सोचय।'

सुकान्त कहलथिन—'हमरा तँ नहि किछु फुरैत अछि, अहीं कहू जे की करक चाही?'

'हम की कहू! हम के होइत छी कहऽवाली'—पत्नी बजैत रहलीह।

'तखन हमही की करू? हमरा तँ बुझवा मे नहि अबैत अछि'—सुकान्त बजलाह।

पत्नी आक्रोश प्रकट करैत बजलीह—'सौंसे घर मे तँ हमहींटा छी अहाँक दुश्मन। भगवान् हमरा बजाइयो नहि लैत छथि।'

सुकान्त कहलथिन—'हुनको अहाँक स्वभाव बूझल होयतनि ...परन्तु ओ-ऽ जयबाक एते' जल्दी किएक? यदि एतऽ जी

नहि लगैत हो तँ किछु दिनुक लेल अनतऽ कतहु किएक नहि चलि जाइत छी। हमर मतलब जे......

ता बात कटैत पत्नी बजलीह—'खूब जनैत छी अहाँक मतलब। मुदा हम कतहु नहि जायब। एतहि अहाँक कपार पर बैसलि रहब......'

सुकान्त बजलाह—बैसलि रहू! किन्तु कपार पर नहि हृदय मे बैसबाक प्रयास करितहुँ तँ बेशी नीक होइत।'

पत्नी केँ बेशी बर्दास्त नहि भेलनि। दूनू आँखि मे नोर छलछला अयलनि। जाइत-जाइत बजैत गेलीह—'बड़ा अयलाह अछि हृदयबला! पाथरक हृदय लऽकऽ हृदयबला बनैत छथि......खाली बियाहक शौख भेलनि ...'

थोड़ेक कालक लेल जेना आफत टरि गेल हो। सुकान्त चैनक निसास लेलनि! जानि नहि, आइ भोरे-भोर ककर मुँह देखने छलाह। आर ककर देखने होयताह...वैह तँ भोरे-भोरे आबि कऽ उठा गेलि छलीह...आइ उठब नहि की? आर कते सुतब...। अर्थात् आब उठू। हमरा सँ बक-झक करबा लेल तैयार भऽ जाउ। वाह रे आमन्त्रण......भोरे-भोर युद्धक आमन्त्रण......

सुकान्त फेर खिड़की सँ बाहर दिस ताकऽ लगलाह। देखलनि जे ओ स्त्री ओहिना जारन बीछि रहल अछि। बेर-बेर हटौलो उत्तर एक जिद्दी लट ओकर स्निग्ध कपोल केँ छूबि लैत छैक .....

फेर ओ ऊपर गाछ दिस तकैत बाजलि—'आब उतरबो करू ने, कते बेर चढ़ि गेलैं।

आ सुकान्त देखलनि ओकर पति कें। गाछपर सँ उतरि मुस्कुराइत पत्नी दिस तकलक। पत्नी कें जेना लाज भऽ गेल होइ......

सुकान्तक आँखि मे बड़ीकाल धरि ई चित्र बनल रहल। सुकान्त आबि कऽ बैसि रहलाह आ सोचऽ लगलाह भोरक घटना कें...चाहक ओ स्वाद। चाह मे चीनीक कोनो स्वाद नहि होइत छैक। ओ तँ हाथ-हाथक स्नेह होइत छैक जे ओकरा मीठ-माहुर बनबैत छैक......मुदा अजुका चाह।

सुकान्त कें लगलनि जेना हुनकर दम घुटि रहल हो...ओ की करथु ! आखिर पत्नीक असन्तोषक कारण की थिक। ओ सेह नहि बुझि पबैत छथि। बुझथिन किएक नहि...खूब बुझैत छथिन। मुदा ओ कऽ की सकैत छथि...से तँ अपन-अपन दुर्भाग्य...एहि मे हमर कोन दोष...हुनका तँ अपन दुर्भाग्य पर कानक चाही। हमरा सन निरीह व्यक्ति पर रोष उतारि कऽ की भेटैत छनि ?

—साड़ी चाही, कपड़ा चाही, गहना चाही एहि 'चाही'क कतहु अन्त नहि छैक। घरमे एकोटा नीक कुरसी नहि, रेडियो बिना घर सुन्न लगैत अछि—दुपहरक समय काटब कठिन भऽ जाइत अछि—

सुकान्त पत्नीक एक-एक फरमाइस पर विचार करब शुरू कयलनि। एहि दस वर्षक वैवाहिक जीवन मे एकर बड़ पैघ सूची भऽ गेल छलनि हुनका लग। दूपहर कऽ ओ आफिस मे रहैत छथि, मुन्ना स्कूल चल जाइत अछि, नन्हें बेसीकाल सूति

रहैत अछि आ नौकरो केँ तँ येह बूलऽ जयबाक समय भेटैत छैक। से सावित्री केँ भरि दुपहर मन औनाइत रहैत छनि... एसकर मन मारने बैसल रहब कोना नीक लगितनि ?

सुकान्त सोचलनि जे प्रायः एही सभ कारणेँ सावित्रीक स्वभाव एहि तरहक भेल जाइत छनि।

से सुकान्त स्थिर कयलनि जे तत्काल कहुना एकटा रेडियो कीनि देब बेजाय नहि होयत। सन्ध्याकाल आफिस सँ अयला पर जखन ओ चाह पीबऽ बैसताह आ कोनो मधुर भास केँ सुनि बिहुँसैत पत्नी जखन चाहक प्याला हाथ कऽ देथिन तँ ओकर स्वाद निश्चय भोरक स्वाद सँ बदलल रहतैक...

तखने सुकान्त केँ मुन्नाक स्मरण भऽ अयलनि। ओहो एकटा साइकिल लेल जिद्द कयने छल आ सुकान्त गछियो लेने छलथिन। आब सुकान्त केँ अपन बात राखक छलनि।

'एके बेर कतहु सँ बहुत रासेक रुपया आबि जैतनि'...... सुकान्त सोचऽ लगलाह। हठात् सिक्कमक लाटरीक 'ड्राइंग डेट' केँ मन पाड़ऽ लगलाह। एक लाखक पहिल इनाम छैक। देखी जे ककरा भेटैत छैक। जँ भेटि जैतनि तँ सभटा सावित्रीक आगू मे पटकि दितथि—हे लिय! जे किनबाक हो कीनि लिय......

तखने मुन्ना आबि कऽ मन पाड़ि देलकनि—'आइ हमर कोर्सक किताब सभ लेने आयब।'

ता दोसर दिस सँ नन्हें आबि अपन अस्फुट स्वरमे बाजल—'बजार सँ चीजसभ औतैक—रुपैया दियहु।'

सुकान्त केँ जेना आकस्मिक धक्का लागल हो—एते जल्दी सभ रुपैया खतम भऽ गेलैक। हे भगवन्! किछु बुझवा मे नहि अबैत अछि जे की करी...

सुकान्त अपन स्थिति पर आक्रोश प्रकट करिते छलाह कि एक विचित्र घटना भऽ गेल। सुकान्त, सावित्रीक ई रूप नहि देखने छलथिन...तँ कि ई बताहि भऽ गेलीह...। एहि तरहेँ कानब, माथ-कपार पीटब, प्रलाप करब, देखि सुकान्त स्तब्ध छलाह। एना किएक? भयभीत सुकान्त पत्नी केँ सम्हारबा मे लागल रहलाह।

सुकान्त पत्नी पर अविश्वास कयने छलथिन—सभ टाका खतम नहि भऽ गेलैक तँ कि क्यो बाकस मे बन्द कऽ रखलकैक ...।

आ सावित्री अपन अकाण्ड ताण्डव सँ सभ केँ विस्मित-भयभीत कऽ देलथिन।

सावित्री बेहोस छलीह। सुकान्त माथ पर हाथ धयने चिन्तामग्न छलाह। नन्हें ओ मुन्ना लगक कोठली मे दुबकल छल। नोकर सहटि कऽ बाहर चल गेल छल। सौंसे डेरा मे एक विचित्र, मनहूस उदासी पसरि गेल छल।

सुकान्त चिन्तित भाव सँ बैसल छलाह। क्षणमे एतेक पैघ कांड भऽ जयतैक तकर कनियो आशंका नहि छलनि। उद्वेग मे टहलऽ लगलाह। दोसर कोठली मे बैसल नन्हें पर नजरि गेलनि। ओकर गाल परक नोरक टघार देखि ओ विह्वल भऽ उठलाह। तड़पि कऽ कोर मे उठा लेलथिन, गाल पोछि देलथिन आ करेज सँ सटा लेलथिन।

सुकान्त केँ आफिस जयवाक छलनि। चल गेलाह्।

संध्याकाल जखन अयलाह् तँ डेरामे तखनो मृत्युक स्तब्धता व्याप्त चल।

राति मे जखन सूतऽ लगलाह् तँ नन्हें केँ शोर कयलथिन।

नन्हें डेराइत माय सँ पुछलक—हम बाबूजी लग सूतब। माय दबारि देलथिन—नहि् एतऽ सूत।

परन्तु नन्हें विद्रोही जकाँ बाजल—'नहि, हम बाबूजिये लग सूतब' आ ओ दोसर कोठली दिस चलल।

सावित्री कें बर्दास्त नहि भेलनि। कसि कऽ एक चाट लगबैत बजलीह्—'जो, जहाँ जयबाक होउ। फेर कहियो हमरा लग अयलह् तँ टाङ तोड़ि देब।'

नन्हें ने कानल ने किछु बजबे कयल। चुपचाप आबि कऽ पिताक छाती मे घुसिया रहल।

थोड़ेककालक बाद सुकान्त देखलनि जे नन्हें अपन छोट-छोट सुकोमल आङुर सँ हुनकर आँखि केँ पोछि रहल अछि। सुकान्त दुलार सँ ओकर हाथ मे चुम्मा लऽ लेलथिन।

'बाबूजी। अहाँ कनैत छी?'—नन्हें पुछलक।

'नहि् तँ!'—सुकान्त उत्तर देलथिन।

नन्हें बाजल—'अहाँ केँ माँ मारने छलि? ओ अहाँ सँ हरदम झगड़ा करैत अछि।'

सुकान्त एहि प्रश्न की उत्तर दितथिन?

नन्हें सँ नहि् रहल गेलैक। फेर बाजल—बाबूजी। हम दूनू गोटा कतहु भागि चलू। माँ केँ एसकरे छोड़ि दियऽ तखन बुझतीह।

सुकान्त नन्हेंक एहि प्रतिक्रिया केँ नीक जकाँ बूझि रहल छलाह। दुलार सँ कहलथिन 'आब सूतऽ। बड़ राति भऽ गेलैक।'

परन्तु सुकान्त स्वयं नहि सूति सकलाह। दिनुक बीतल घटना एक-एक कऽ ध्यान मे आबऽ लगलनि ...

सुकान्त केँ मन पड़लनि भोरक चाह...सावित्रीक क्रोधपूर्ण चेहरा...जारनि बीछऽवाली ओ स्त्री...पीयर साड़ी, हँसैत ओकर मुँह आ ओकर जिद्दी लट...आ फेर सावित्रीक रौद्र रूप।

सुकान्तक मन विरक्त भऽ उठलनि। दिन-रातिक गृह-कलह ... नरकतुल्य अछि ई हो जीवन...आखिर ककरा लेल जिबैत छी ?...एहि सँ जतेक जल्दी मुक्ति भेटय ततेक नीक...

ता नन्हें अपन दूनू टाङ उठा कऽ सुकान्तक देह पर राखि देलक।

बहुत राति धरि सुकान्त एहि भाव तन्द्रा मे डूबल रहलाह। निन्न आबिये रहल छलनि कि हुनकर शरीर परिचित नारी शरीरक स्पर्शक अनुभव कयलकनि— रोम रोम कंटकित भऽ उठलनि तथा दू हृदयक धड़कन ओहि नीरवता मे स्पष्ट भऽ उठल।

सुकान्तक तन्द्रा टूटि चुकल छल, परन्तु मन ओहिना दूर-दूर धरि भसिया रहल छल

रहि रहि कऽ सिसकीक स्वर कान केँ छूवि रहल छल...

सुकान्त केँ इच्छा भेलनि जे कतहु आन ठाम चल जाथि। कम सँ कम एखन कतहु कात जा कऽ सूति रहथि। ओ उठि जयबा लेल उद्यत भेलाह।

ता दू बाँहिक बन्धन हुनका जोर सँ जकड़ि लेलकनि।



स्वप्न-भङ्ग

श्री ललित

डाक्टर अधिकलाल बेंतक मोढ़ा खीचि खाट लग बैसि रहलाह् जाहि पर जगेस्सर बेहोश पड़ल रहय।

बड़ु थाकि गेल रहथि। गोली बहार करबा मे बड़ श्रम भेल रहनि।

रोगीक हालति अधलाहे रहैक। जाँघक घाव ओकर सड़ि गेल रहैक। छौ दिन बिलम्ब भेलैक गोली बहार करबा मे। जहर सौंसे देह मे पसरि गेल रहैक। साँस ओकर भारी चलैक। दवाइक निसाँ मे रहलो पर घोर यन्त्रणा सँ रहि-रहि कुहरय। बचबाक आस कम्मे रहैक।

दीर्घ श्वाश लऽ उठलाह् डाक्टर आ खिड़की लग आबि ठाढ़ भेलाह्। बाहर आसिनक मेघाच्छन्न अन्हरिया रहय। दूर कोनो दिग्घी मे गोड़ल पटुआक सड़ल-गन्ध लेने पुरिबाक एक लहरि आयल। डाक्टर नहुयेँ खिड़कीक पट्टा ओंगठा देलनि।

फेर मोढ़ा पर आबि बैसि रहलाह। जगेस्सरक वेदना-विकृत मुँह पर निसाँक निन्न रहैक। जेना कलेशक आवेग मे मोन कृत्रिम निन्नक तारतम्य तोड़बाक प्रयास करैत हो।

वेदना मनुक्खक मनेटा नहि, ओकर आकृतियो केँ धो-पखारि सहज कऽ दैत छैक! आँखि जगेस्सरक मुनल रहैक जाहि सँ ओकर-क्रूरताक कोनोटा आभास नहि रहैक। कारी सघन-मोंछ, तिलकल केश, बढ़ल दाढ़ी, आ सोझ मिलल भौंह। एहि कुख्यात डकैतक मुँह अन्य साधारण रोगी जकाँ रहैक जे कोनो सर्जिकल-वार्ड मे भेटि जायत।

जकरा नामे मोरङ्ग-मोगलानक सिमान पर खढ़ जरैत रहय से जाँघक सड़ैत घाव सँ पीड़ित असहाय भेल एकटा जौड़खट्टा पर डा० अधिक लालक डिसपेन्सरी मे पड़ल रहय। छौ राति पहिने एक ठाम डकैती करैत काल जाँघ मे गोली लगलैक। काश-पटेर आ झौआक सघन जंगल धयने तीस मील चलि ओ असोथकित भऽ आइ डाक्टर अधिक लालक 'अङ्गरेजी दवा-खाना' मे पहुँचल रहय।

डा० अधिक लालक ई डिसपेन्सरी मोरङ्ग-सीमान पर अवस्थित रहनि।

कोशिकन्हाक ओ वन्य-प्रान्त डकैतक स्वर्ग रहय। कोशीक छाड़नि सभ सँ भरल बालुकामय बंध्या धरतीक विराट्-आँचर जतऽ पशुपालन जीविकाक मुख्य-साधन रहय।

एहन दुर्गम-स्थान मे डिसपेन्सरी खोलि कैक खेपी ओहि इलाकाक घायल डकैत सभक इलाज कऽ चुकल रहथि। ओकरा

नकारि देबाक ने साहस होइनि ने आवश्यकता बूझथि। पीड़ित मानवताक सेवाक सङ्ग यथेष्ट धन प्राप्त होइनि। मुदा अपन सिद्धान्त रहनि। प्रथम जे फीसक स्थान पर डकैतीक माल नहि लेब। दोसर जे डिसपेन्सरी मे राखि इलाज नहि करब।

मुदा आइ संध्याकाल जखन जाँघ मे लागल गोलीक सड़ल घाव सँ ज्वराक्रान्त जगेस्सरक पीत भयार्त्त मुँह हिनक खिड़की सँ हुलकल तँ ओकरा हठात् दुतकारि देबाक इच्छा नहि भेलनि। अपन दल सँ फुटल एकाकी एहि डकैतक मनोयोग-पूर्वक चिकित्सा कयलनि। अपने घरमे एकटा जौड़खट्टा पर ओकरा शरण देलनि।

एहि सँ पूर्वो ओकर इलाज दुइ खेपी कऽ चुकल रहथि— एक बेर जखम पाँखुर पर गड़ाँसक छव बजरल रहैक। मुदा दुनू खेपी ओकर-इलाज मे जगेस्सरक उदीयमान चेला बीलट रहैक संगे। हिनका मात्र मलहम-पट्टी, दवाइ-सुइक प्रयोजन रहनि। ओ शरणागत सभ रहय लालचन्द सोनराक घरमे।

मुदा एहि बेरक स्थिति भिन्न रहैक। एकसरे रहय जगे-स्सर। बिलटा ओतहि धरा गेल छल। आर सभ गरोह छिट्ट-फुट्ट छल। जखन संध्याकाल जगेस्सर आबि हिनक दवाखना मे हठात् टेबुल पर माथ दऽ पड़ि रहल तँ ओकर इलाज करबाक अतिरिक्त हिनका लग दोसर कोन उपाय रहनि ?

जगेस्सरक साँस मे घरघरी अयलैक। ओह! एकर जीबाक आशा कम। डाक्टर सोचलनि। मुइलाक बाद लाशक निस्तारक समस्या हठात् चिंतित कऽ देलकनि। आइ भोर धरि मरि जाय तँ फेर काल्हि-राति एकर लाश बोरा मे कसि

कोनो प्रकारे नदीमे भसियौनाइ आवश्यक ! मुदा एखन तँ ई चिंता व्यर्थ ; एखन तँ एकर उपचारक समस्या ।

उठि कऽ सिरिंज मे कोरामिन भरलनि । फेर ओकर बाँहि मे खोंसि दवाइ नहुँए-नहुँए प्रवेश करौलनि ।

ओकर सांसक गति सहज भेलैक । नाड़ी ओकर देखलनि डाक्टर । छिन्न सूत जकाँ चलैत नाड़ी आब पुष्ट भेल जाइत छल ।

जगेस्सर पानि मङलक । टिनही मऽग मे पानि भरि ओकरा कण्ठक नीचा कयलनि ।

जगेस्सर आँखि फोललक । डूबल-भसल आँखि । जेना अपन स्थितिक स्मरण करैत हो । फेर चौंकि कऽ जगेस्सर डाँड़ टोलक ।

क्रुद्ध स्वरेँ बाजल—माल कतऽ टपा देलेँ ? निकाल तुरत, ने तँ दू खण्ड कऽ काटि देबौक ।

डाक्टर विहुँसलाह । ओकर क्रोधक कोनो प्रभाव नहि भेलनि—सीरम तर राखल छौक ।

जगेस्सर कष्ट सँ हाथ उठा सीरम तर सँ एकटा बड़का गजिया बहार कयलक । स्वर्णाभूषण आ नोट सँ बेडोल भेल गजिया केँ टोइत-टोइत शान्त भेल !

मुँहक सभटा क्रूरता समाप्त भऽ गेलैक । डाक्टर दिस ताकि हँसऽ लागल । बाजल—डाक्टर तों सोचैत होयबेँ जे ई आब मरिये जायत...। तखन लूटि कऽ सभटा माल पचा जायब । आ कि ने ।

डाक्टरक मुँह सदति भावहीन रहनि। जेना काठक बनल नाक-कान आँखि-भौंह हो। बजलाह—जगेस्सर, तोँ जँ एतेक आराम सँ मरि जयबेँ तँ भगवान पर सँ लोककेँ एकदम्मे विश्वास हटि जयतैक। तोरा एखन बड्ड बाँकी छौक।

क्रोधक स्थान पर विनोदक भाव रहैक जगेस्सरक मुँह पर। बाजल—डाक्टर, तोरा मे नीक डकैतक सभटा गुण छौक। हमरा बरोबरि भेल अछि जे तों डर सँ हमरा लोकनिक इलाज नहि करैत छेँ। तोरा कनेको डर नहि होइत छौक।

जगेस्सर आँखि मुनि लेलक। बेदनाक फेर एकटा लहरि सौंसे देहकेँ मरोड़ि देलकै। दाँत पर दाँत चढ़ा कुहरब रोकने रहय। होश मे ओकरा मुँह सँ कुहरब बहार भऽ जाइक से ओकरा सह्य नहि रहैक।

दर्दक वेग कमलैक तँ बाजल—डाक्टर! तोरा जहरमे कोनो सामर्थ नहि छौक। साँझ सँ कतेक जहर तोँ देलेँ मुदा हम नहि मुइलियौक। कोनो असली आ तेज जहर दे। बड्ड तकलीफ अछि।

—जहर सँ तोँ कोना मरबेँ। तोँ तँ मरबेँ अमृत सँ। मुदा अमृत हमरा लग कतऽ!

फेर डाक्टर उठलाह। आलमारी सँ एकटा ब्रांडी बोतल बहार कऽ ओकर मुँह सँ लगा देलथिन। आँखि मुनने आधा-शीशी गट्ट-गट्ट कऽ कोनो दवाइक भ्रम मे जगेस्सर पीबि गेल।

बड़ी काल धरि कुस्वाद सँ लड़ैत रहल। वेदना-विलह्व ओकर मुँह सहजता मे शान्त भऽ गेलैक।

आँखि खोललक—डाक्टर, दारू हम नहि पीबै छी, तखन किए पिया देले ? मरऽ काल सभटा भोग पुराइये देलें।

जगेस्सरक आँखि पीरी छोड़ि लाली धयलक। ब्रांडीक निसाँ मोन पर असर करऽ लगलैक। मुँह पर अबोध शिशुक निष्कपट भाव आबि गेलैक जेना कोनो महा-सुखद स्वप्न देखैत हो।

बाजल—डाक्टर तोरा देखि हमरा माय मोन पड़ि जाइये। तोरा लग बैसल तेहने लगैये, जेना माय लग बैसलि लगैत रहय ! ई दारू हम बीस-बरखक बाद पीलहुँ अछि। केहन-केहन सपना मोनमे नाचऽ लगैये।

बीस बरख डाक्टर !

स्वप्न-लोक से प्रफुल्ल-भावें घुमैत रहय जगेस्सर। बाजल—डाक्टर, लोक जंगलो मे मने-मने नीक सपना देखैत रहैये। बड़ नीक। अपन मोन माफिक। अच्छा डाक्टर, लोकक नीक सपना जखन टूटि जाइत छैक तँ केहन लगै छै ?

—बड़ खराब। जेना शीशाक खूब रंग-बिरंगी घर क्यो हाथ सँ खसा तोड़ि दैक।

एक क्षण चुप रहल जगेस्सर। जेना ई उपमा खूचिगर बरु नहि लागल होइक। कने सोचि बाजल—जेना कमलक फूल सँ भरल छोट पोखरि कें कोनो पाड़ा छाछड़ि काटि फूल-थाल-कादो एक कऽ देने हो आ कि क्यो बड़ ऊँच सँ भराक दऽ एके बेर खसैत हो।

डाक्टर दिस तकलक जगेस्सर।

—हँ तेहने सन लगै छै।

—आ ओहि पाड़ा पर आ कि शीशाक घर तोड़निहार पर कतेक तामस उठैत छैक ?

बड्ड तामस उठैत छैक। होइत छैक, कण्ठ मोकि दिऐक।

डाक्टरक गप्प पर जगेस्सरक आँखि उल्लासें चमकि उठलैक। प्रफुल्लित भऽ बाजल—ठीक डाक्टर, एकदम ठीक। होइ छैक ओकर कण्ठ मोकि दिऐक। बेस, डाक्टर, तोहर स्वप्न जँ क्यो तोड़ि दौक तँ तोहूँ ओकर-कण्ठ मोकि देबही ?

डाक्टर अधिक लाल चुप्प रहलाह।

हुनका दिस अविश्वासें ताकि जगेस्सर बाजल—नै तोरा बुते कण्ठ मोकल नै पार लगतौक। असल मे डाक्टर, तों सपने ने देखि सकै छें। तों जागल मे कोन गप्प, निन्नो मे ने बिसुनाइत होयबें। तोरा सन काठक मुँहवला लोक सपना नै देखैत अछि। जे-से हमरा संतोखक लेल तों कण्ठ मोकबाक कथा बजलें।

जे-से !

तँ सुन डाक्टर, मोन दऽ सुन। आइ सँ बीस बरख पहिने हमहूँ कण्ठ मोकि देने रहिऐक अपना घरबालीक।

हँ घरेवाली कहक चाही। ओना ओ हमर भाउजि रहय। मुदा जखन हमर भाय एकटा हँसेरी मे मारल गेल तँ ओकरा सँ हमर चुमाओन भेल। ओहन काजुल लोक हमर माय कें बड्ड पसिन्न रहैक। हऽर चलौनाइ छोड़ि ओ घरक सभ काज देखैक। हमरा सँ पाँच बरखक जेठ। मुदा लागैक नै। देहक माटि बड़ सक्कत। गोरि-नारि। नाम-चाकर। से, ओकर कण्ठ हम मोकि देलिऐक !

किएक मोकिलिऐक तकर पता आइ धरि नै लागल। ठीके, बड़ छोट बात पर।

जगेस्सरक स्वर भहरि गेलैक। जेना कोनो दूर अन्तराल सँ प्रतिध्वनित होइत बोल लगैक।

बाजल—पटुआक गाड़ी लादि हम फारबिसगंज गेल रही। पटुआ बेचि सांझखन पहिल दिन हम दारू पीने रही। थोड़बे। खखना सङ्ग। ओ कलकतिया रहय। छुट्टी गाम मे काटऽ आयल छल। आ ओकरे सङ्गे फारबिसगंज मेला घूमल रही। दारूक निसां; सौंसे लोकक भीड़। नीक-नीक नूआ-आङी पहिरने सुन्नर-सुन्नर लोकसभ।

तकरा बाद नौटंकी देखलहुँ। ओह, नगाड़ाक एखनो आवाज ओहिना कानमे अबैये। तड़ड़-तड़ड़ धिन। तड़ड़-धिन!

ओहि मे मिस बेला कुमारीक डांस। डाक्टर, ओ छौंड़ी नचै? घिरनी जकां नचै। घघरा फूलि कऽ कमलक फूल जकां फुला जाइक। तेहने इसारा-बतान।

ताही जोसपर अपन घरवाली लेल एकटा खूब नीक रेशमी ब्लाउज किनलहुँ।

गाम लौटती काल राति मे टहाटही इजोरिया रहैक। बड़द हँकैत काल ओ ब्लाउजक पोटरी जांघतर दबने रही। मने-मन सोची, आइ अपनो घरवाली कें ओहिना मिस बेला कुमारी जकां ई लाल रेशमी ब्लाउज पहिरायब।

आ टहाटही इजोरिया, बड़दक गराक घंटी। बड्ड मोन खुशी रहय। मोन नै अछि, मुदा लागल जेना रेशमी समुद्र मे भासल जा रहल छी।

आ ओही स्वप्न मे जखन घर पहुचि ओकरा जगौलिऐक तँ डाक्टर ! ओ गारिए मुहेँ उठल।

बड्ड गारि देलक जे हम दारू पीबि कऽ मेला मे सिरकी-पट्टी घुमैत रही। इत्यादि।

तैयो हम ओकरा हाथ मे रेशमी ब्लाउज देलिऐक आ कह-लिऐक पहिरि ले एकरा।

आ ओ की कयलक डाक्टर ? ओ ब्लाउज, जकरा तीन कोस सँ हम अपन सपना मे लपेटि कोरा मे अनने रही अपन बेला कुमारी लेल, तकरा जुमा कऽ एँठ कठार पर फेकि देलक।

हमरा भेल, जेना चन्द्रमा पर सँ क्यो धकेलि देने हो। बड्ड भीतरी मोन केँ छन्न दऽ क्यो लुत्ती धिपा दागि देने हो।

ओकर कण्ठ दुनू हाथेँ दबा हम कहलिऐ—किएक चिकरै छेँ एना तों ? कण्ठ मोकि देबौक। आ ओकर कण्ठ मोकि देलिऐक !

जखन ओ हमरा देहपर भहरा खसलि तखन होस भेल !

बड्ड लाज भेल। लोक ओ एँठ कठार पर फेकल ब्लाउज देखि की कहत ? कनेक हँसत हमरा पर !

हम राता-राती भागि गेलहुँ। ता ई नै बुझलिऐ जे ओ मरि जयतै। खाली ओ फेकलहा ब्लाउजक लाजेँ घर सँ पड़यलहुँ।

तेसर दिन पता लागल जे ओ मरि गेलैक ! तहिया सँ ओही ओझरायल सपना मे बौआइत छी !

दीर्घ साँस छोड़लनि डाक्टर। एहि क्रूर कर्मा दुर्दान्त-दस्यु पर ममता भेलनि। सोचलनि—क्यो एकर स्वप्न जान-अनजान तोड़ि देलकै आ फेर दोसर स्वप्न सृजन सँ असक ई टूटल स्वप्नक भार लेने सभक सपना तोड़ैत चलैत अछि। सभ सँ बदले लैत अछि।

बाजल—हँ। ठीके जागो! सपना टुटलाक बाद लोक लोक नहि रहि जाइत अछि। हम सभ, जंगलो मे सपने मे जिबैत छी।

जगेस्सर आंखि मुनने रहय। ओकर हाथ लूटिक माल सँ भरल बेडौल गजिया पर निश्चेष्ट पड़ल रहैक।

—:०:—

एकटा चिनमा खयलिऐ रौ भैया।

प्रो॰ मायानन्द मिश्र, एम॰ ए॰

एन्टी करप्सनक जुनियर इन्सपेक्टर मिस्टर सिन्हा जखन सदर थाना सँ पुनः सदर कोर्ट दिस बिदा भेलाह् तँ मुँह् लटकि गेल छलनि, डेगक उत्साह् पड़ा गेल छलनि आ मोन वितृष्णा सँ भरि उठल छलनि।

फेर मनसूबा पर अस्सी मोन पानि पड़ि गेलनि। आखिर एकोटा आसामी नहि् पकड़ि सकलाह्। एहि् सँ पहिनो एक बेर चान्स भेटल छलनि, मुदा ओहू ट्रिप मे ककरो नहि् पकड़ि सकल छलाह्।

विश्वास होयबा मे एकोरत्ती भाङठ नहि् रहलनि जे एहू बेर प्रमोशन नहि् होयत। दू टा चान्स आ एकोटा असामी नहि्! कोन मुँह् लऽ कऽ हेड आफिस जयताह्? कोन मुँहेँ मिस्टर वर्मा केँ तरक्की दऽ कहि् सकथिन? कोना अपन पे-स्केल दऽ...आखिर कोना? कोन एफीसियेन्सी पर?

आगू किछु नहि सोचि सकलाह। मोन माहुर भऽ उठलनि। डेग आरो भरिया गेलनि।

सिगरेट पीयब बिसरि गेलाह, अपन पे-स्केलक गप्प बिसरि गेलाह, दुखिताहि पत्नीक मुँह बिसरि गेलाह, आधा दर्जन कुमारि बेटी सभ कें बिसरि गेलाह, मात्र मोन पड़ि अयलनि मिस्टर सहायक भाग्य आ डबल प्रमोशनक गप्प।

—मिस्टर सहाय एके साल धरि जुनियर रहलाह, एक टा चान्स भेटलनि, ओही मे एक सङे दू टा असामी पकड़लनि, हेड आफिस मे तहलका मचि गेल आ मिस्टर वर्मा मिस्टर सहाय कें डबल प्रमोशन दऽ देलथिन। टी-पार्टीक दिन बहुतो जुनियर सभ मिस्टर सहायक भाग्यक प्रशंसा कयने छल।

आ ताही दिन सँ मिस्टर सिन्हा एकटा चान्स लेल लालायित छलाह।

ओहो दिन आयल। पेपर मे दू दिन धरि बहराइत रहलैक जे रंगभूमि जिला मे घुसखोरी आ भ्रष्टाचार अपन सीमापर पहुँचि गेल अछि, सम्पादकक नाम पत्र सेहो छपलैक, एम० एल० ए० क नाम मिस्टर सिन्हा बिसरि रहल छलाह, मुदा विभागीय मंत्री श्रीपति नाथक आफिस मे अनायासे आगमन आ तीख फटकार ओहिना मोन छलनि। मंत्री महोदय बाजल छलाह, 'मेरा ही क्षेत्र इतना बदनाम हो और आप लोग बैठे-बैठे—कम से कम अगले एलक्शन तक तो......।

मिस्टर वर्मा आतंकित भऽ उठल छलाह। ओही दिन डिपार्टमेंट मे मिटिंग भेल छल आ मिस्टर वर्मा मिस्टर सिन्हा

केँ पुनः दोसर चान्स देलथिन। अबैत काल मिस्टर वर्मा कहनो रहथिन—'जाइये, इस बार एक भी आसामी जरूर पकड़िये, मैं आपके लिए डबल प्रमोशन के कागजात ठीक रखता हूँ, लेकिन सावधान, सोच समझकर, आजकल मंत्रियों के सगे-सम्बन्धी अपने-अपने धन्धे में लगे हुए हैं...जरा समझ-बूझकर...।'

आ यैह 'समझ-बूझ' मिस्टर सिन्हा केँ काल भऽ गेल छलनि। यैह एक टा शब्द सभटा बाधा ठाढ़ कऽ रहलनि अछि। नहि तँ असामी तँ तेहन-तेहन पकड़लनि जे...।

रंगभूमि जिलाक हेडक्वार्टर पहुँचऽ सँ पहिनहि बाटे मे एकटा ट्रक पकड़लनि, गाँजा छलैक। बड़ मनसुवायल छलाह। हर्ष सँ दौड़ि गेल छलाह ट्रक लग। मुदा ओकर ड्राइवर जखन एकांत मे लऽ जाकऽ बगलबला सीट पर बैसल व्यक्ति दऽ कान मे कहने छलनि जे फलाँ 'मंत्रीजी के अमुक हैं' तो चिहुँकि उठल छलाह। मोन पड़ि आयल रहनि मिस्टर वर्माक शब्द 'समझ-बूझकर'। जाहि मंत्रीक नाम ओ ड्राइवर कहने छलनि से अपने विभागीय मंत्रीं छलथिन। मसोसि कऽ रहि गेल छलाह मिस्टर सिन्हा। की कऽ सकैत छलथिन ? आखिर मंत्री महोदयक भातिजे केँ कोना कऽ असामी बनबितथि ? आ सेहो अपने विभागीय मंत्री ! मिस्टर वर्माक अपेक्षित ! आ तखन प्रमोशन की जे डिसमिसे भऽ जयबाक भय।

विवश भऽ मिस्टर सिन्हे सिकरेट पियौने रहथिन। आ मन्हुआ कऽ विदा भेल छलाह जिलाक हेडक्वार्टर दिस।

जोख एकटा आरो भेटलनि, नहि भेटलनि से गप्प नहि, मुदा भाग्ये तेहन फूटल छलनि जे सभ ठाम मिस्टर वर्माक शब्द 'समझ-बूझकर' बाधा दैत गेलनि ।

मोन पड़लनि —

हार्ड मैनवल लेबर स्कीमक सिलसिला मे सदर सबडिवी-जनक एस० डी० ओ० एकटा ठीकेदार सँ तीन हजार सलामी लैत रहथिन जाहि मे ठीकेदार केँ पाँच हजारक लाभ होइत रहैक । मिस्टर सिन्हा सभ दिन तेज रहलाह, पढ़बो-लिखबा मे आ अपन काजो-उद्यम मे । संस्कारक कारणेँ इमानदारो कम नहि । मुदा भाग्य-रेखा सभ सँ कमजोर । हिनक दुर्भाग्य एहन जे ओहि एस० डी० ओ०क साक्षाते मामा लोक सभाक प्रभावशाली सदस्य । एहि बेर डिप्टीयो मिनिस्टर होयबाक संयोग छलनि । ऐन मौका पर एस० डी० ओ० सँ परिचय भेलनि, ई गप्प खुजल, मिस्टर सिन्हा फेरो उदास भऽ गेलाह । असामी हिनका हाथ आबियो कऽ नहि अबैत छनि । बेर-बेर मिस्टर वर्माक शब्द 'समझ-बूझ कर' मोन पड़ि जाइत छनि ।

आ तखने मोन पड़ि जाइत छनि सतति दुखिताहि पत्नी आ आधा दर्जन कुमारि बेटी सभक मुँह ।

आ बेर-बेर मिस्टर सिन्हा अपन आदर्श बिसरि जाइत छथि, अपन डबल प्रमोशनक गप्प बिसरि जाइत छथि ।

सदर कोर्ट दिस चलैत-चलैत मिस्टर सिन्हा चौंकि उठलाह । चौबटिया आबि गेल छैक, कोनो दोकान पर पान खयबाक तीव्र इच्छा भऽ रहल छलनि ।

दोकान पर गेलाह। पान खयलनि आ अयना मे मुँह देखलनि। गोर, गोल मुँह, सफाचट मोछ-दाढ़ी, करिया फ्रेमक चश्मा आ उदास आँखि।

जेबी सँ कैंचा दैत काल आङुर मे दरोगा साहेबक देल कैप्सटन सिगरेटक डिब्बा हाथ मे ठेकलनि। लगलनि जेना जेबी मे बाघ होइनि, गेहुमन साँपक पोआ होइन।

दरोगा साहेब सँ अपन दोस्तीक गप्प बड़ अतिखाइन बुझना गेलनि।

मिस्टर सिन्हा कोर्ट दिस बिदा भेलाह। अंतिम शिकार हाथ मे आबि कऽ चल गेल छलनि। निश्चय भऽ गेलनि जे आब प्रमोशन नहि भऽ सकैत अछि।

एकटा डकैती केस मे दरोगा साहेब कें पकड़बो कयलनि, एकदम रंगले हाथ, तँ ओ मित्र छलथिन। जखन गाँजाक ट्रक कें छोड़लनि, एस० डी० ओ० कें छोड़ि देलथिन, तखन अपन मित्र कें कोना पकड़ितथि ?

एक दिस स्कुलिये जीवन सँ मैत्री, दोसर दिस प्रमोशन, दुखिताहि पत्नी, आधा दर्जन कुमारि बेटी आ अंतिम चान्स।

मिस्टर सिन्हा हताश भऽ गेल छलाह। की एहू बेर ओ खालिये राजधानी घुरताह ?

मोनमे भेलनि, एखनजँ डेग-डेग पर गली-गली मे, आफिस आफिस मे घुसखोरी आ भ्रष्टाचार नङटे नचैत रहितैक तँ ओ अवश्ये एकोटा असामी कें पकड़ि सकितथि। तखन अवश्ये हुनक प्रमोशन भऽ जैतनि। मुदा......।

ता सदर कोर्टक नजारत लग आबि गेल छलाह मिस्टर सिन्हा। नजरि पड़लनि, एक टा चपरासी दू-तीन टा देहाती सँ किछु लऽ कऽ नुकाकऽ जेबी मे धरैत छल। झपटि कऽ पहुँचलाह आ चट दऽ पकड़ि लेलथिन। नजारत मे ई भ्रष्टाचार !

एके क्षणमे सौंसे सदर कोर्ट मे आगि जकाँ गप्प पसरि गेलैक जे एन्टीकरप्शनक इन्सपेक्टरक द्वारा नजारतक एकटा चपरासी घूस लैत पकड़ा गेलैक।

चपरासी बहुतो कानल-खीजल, मुदा मिस्टर सिन्हाक इमानदारी विख्यात अछि। तेँ नहि छोड़लथिन।

मिस्टर सिन्हाक हर्षक सीमा नहि छलनि। आखिर असामी पकड़ाइये गेल। ई चान्स खाली नहि गेलनि। आब प्रमोशन होयबे करतनि।

दरोगा साहेबक देल कैप्सटन सिगरेट पीबऽ लगलाह।

बन्हकी

प्रो० धीरेन्द्र एम० ए०

सुकनिक काल्हि दुरागमन थिकै। भारी मोन सँ सुनलक गुड़्की बुढ़िया। गुड़्की बुढ़िया कें सभ डाइन कहैक आ' अपन-अपन नैना-भुटका कें यथासाध्य ओकरा सोझहाँ पड़बा सँ बचावै। घाटपर, बाट मे, सभ ठाम गुड़्की बुढ़ियाक प्रसङ्ग फदका चलए—"...यै बहिन दाइ! गे मइयो!...बाप रे बाप, हकलि छै हकलि!... देखै नइ छथीन, दिन-राति काँची लागल रहै छै आँखि मे!...आ हेऽ! ...किदन किदन बड़बड़ाइतो रहैक ..छै!...हँऽ!..."—मुदा फदका अपन स्थान पर छल आ नैना भुटका अपन ढाठि पर! अतः अपना अपना माइक लगाओल एक सए चौआलिस अछैतो, झुंड बान्हि कें नेना सब गुड़्की बुढ़िया लग जा कए बैसिए रहए।

आ जकर कारणों छलैक। लोक भने गुड़्की बुढ़ियाक गुलेंती भए गेल विकृत शरीर कें देखि नियतिक मारिक अनुभव करबाक बदला मे ओकरा 'डाइन' कहैत रहैक, मुदा हृदयक

स्निग्धताक पारखी नेना सभ सँ गुड़की बुढ़ियाक स्नेह-स्निग्ध स्वभाव नुका नहि सकै छल। जतऽ हरखू मिसर अपन हरुसा क गाछतर ककरो टपऽ नहि दै आ' कनियें मे गारि-मारि पर उतरि आबए ओतए गुड़की बुढ़ियाक आँगन महक लताम, दाड़िम आ' हरुसा समस्त टोलक नेना-भुटकाक लेल—मुक्त छल।—"...हे दाइ! अपन तँ उगलाहा लऽ गेला तखनि तँ गामे-घरक धीया-पूता ने अपन भेल।...की करबहक खाए दहक।..."—बुढ़िया कहैक आ' इएह कारण छल जे माए-बापक एक सए चौआलिस सभ दिन टूटए।

आ पूछल जाए तँ लोकक दृष्टि मे बुढ़ियाक इएह असाधारण उदारता सन्देहक विष-वृक्ष बनि गेल छलै आओर ओकरा 'डाइन' कहल जाए छल। समाजक बस इएह न्याय छल। नीक लोक कतउ एतेक उदार हुअए। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' शास्त्रक आप्त वाक्य रहओ, मुदा सब लोक कि जोगी महतमा छी? से अपन सहज मातृत्वक आपूर्ति करैवाली ओइ सन्तान सँ हीन निराश्रिता-विधवा कें लोक 'डाइन' कहैत छलै, कारण ओ टोल भरिक नेनाक कें अपन बुझय। ई कि कनेक पैघ अपराध छल!!

एतबहि नहि, बुढ़ियाक माथ मे खिस्सा-पिहानीक ततेक पैघ भंडार छलै जे कहल नहि जा सकैछ आ' खिस्सा-पिहानी तथा नेना-भुटका मे तँ गूड़-चुट्टीक सम्बन्ध छैक ने। से जे कनेक फफक पाबय कि सुट्ट दन ओ सभ बुढ़िया कए घेरि कें बैसि रहय।

बुढ़ियाक ओइ ठाम जाइवला नेना-भुटकाक दलमे सुकनी सभ सँ बेशी 'रेगुलर' छल आ' इएह कारण रहै जे गुड़की

बुढ़िया सुकनी कें कनेक बेशी मानय लागल रहै' मोने-मोन ! आर तँ नइ किछु, दुपहरिया मे बुढ़ियाक माथक ढील ताकि दै' सुकनी आ' हुक्का भरि कए आवेशसँ बुढ़िया कें पीबाक हेतु दै। सन्तान सँ हीन गुड़की बुढ़िया कें सुकनीक एहि व्यवहार मे ओतबए पैघ आनन्द भेटैक जतबा कोनो विशाल मरुभूमि मे भ्रमण कएनिहार यात्री कें शुष्क बालुक मध्य नखलिस्तान कें देखि भेटैत अछि। स्नेह एवं सद्भावनाक भूख प्रायः मनुष्यक सभ सँ पैघ भूख थीक ने !!

गामक लोक गुड़की बुढ़िया कें कंजूस कहए आ' ओकरा लोकनिक अनुमान रहै जे बुढ़िया बेश जमा-जत्था गाड़ि रखने अछि। एहिमे सँ बेशी ओ लोक सभ छल जे चाहैत छल जे गुड़की बुढ़िया अपन घर-घरारी ओकरा नामे लिखि दै। किछु गोटय बुढ़िया कें सेवाक प्रलोभन देलकै। एक-दू गोटए तँ किछु दिन धरि बुढ़ियाक तखमीनो कएलक; मुदा जैं कि ओ सभ जमीनक मादे गप्प करए कि बुढ़िया कात भए जाए, मने कोनो वैष्णवक सोझहाँ मे केओ माँछक चर्चा चला देने हो। अतः खिसिया कए बुढ़िया कें ओ सभ 'कंजूस' कहए लागल छल।

बुढ़िया अपन पाँच कट्ठा खेत कें जन राखि नीक जकाँ आबाद करबाबए। ततबे नहि, धनकटनी, रब्बी आ' भदइ सभ मे लोक सभक खेत मे जा कए बोनि करए।—"...हइ दाइ ! एक तँ खटब नइ तँ खाएब की आ' दोसर खटल देह कें की रहल जाइ छै'।"—बुढ़िया कहै' मुदा लोक सब नकिया कें बाजय—"...हँ ! लदने जाएब पीठपर।..."

से सुकनी गुड़की बुढ़िया कें जान सँ बढ़ि कए प्रिय छलै। आवेश सँ ओ ओकरा 'सुक्न' कहै' !—"...हइ सुक्न !...कनी साग बाउग कए दिहें बौआ !..."

आ' सुकनियो कें जेना संसार मे सब सँ नीक गुड़किये बुढ़िया लागै'। कतेको दिन मारि खएने हएत सुकनी एहि चलतिए। माए कहैक—"...धोंछिया ! जी गाड़ने छौ बुढ़िया ! ...माटि पढ़ि कए द' देलकउ धुरखुरक !..."मुदा सुकनी छलि जे गुड़की बुढ़ियाक संग ओकरा छोड़ले ने जाइक।—"बुढ़िया मैया"—कहै ओकरा !!

होइत-होइत गुड़की बुढ़िया आ' सुकनीक एहि समत्वक कथा बेस नोन-मरचाइ लगा कए समस्त गाम मे पसरि गेल। लोकक पका विश्वास छलै' जे गुड़की बुढ़िया मोहन-मन्त्र सँ सुकनी कें वशमे क' लेलकए। किछु तर्क कैनिहारि तँ अनुमान भिरौलक जे गुड़की बुढ़िया सुकनी कें अपन चेली बनबए चाहैत अछि डनिपनक आ' तएँ टोलभरिक माउगक एकगोट 'डेपुटेशन' सुकनीक माइक ओहि ठाम पहुँचिल आ' विचार देलकै' जे आइ दिन सँ सुकनी कें गुड़की बुढ़िया लग नइ जाए दैक।

आ' से ओइ दिन सँ सुकनी पर पूरा-पूरी रोक लागि गेलै। एक दिन बितल। दू दिन बितल। सुकनी बुढ़ियाक ओतए नहि गेल। बुढ़िया कें बुझि पड़ै' मने केओ ओकर प्राण सँ किछु अंश नोचि नेने हो। तेसरा दिन बुढ़िया कें नइ रहल गेलै। कतउ सुकनी दुखित ने पड़ि गेल होइ। जा' कए देख-बाक चाही।—बुढ़िया सोचलक आ' खुट-खुट करैत लाठी

टेकैत विदा भेल। ओ की जानए गेलैक जे गाम भरिक लोक ओकरा विरुद्ध खनखर' पानि पीबि लागल अछि !

आ' गुड़की बुढ़िया जावत धरि सुकनीक माइक घर लग पहुँचए तावत कतेको आँखि मँटकि चुकल छल, कतेको ठोर टेढ़ भए कए कुनमुनाए चुकल छल।

बुढ़िया सुकनीक आँगन पहुँचलि। आँगन खाली देखि खखसि कए सोर पाड़लकै—"सुकन !..."

घरमे माइक संग केथरी सिबैत सुकनीक कानमे बुढ़ियाक चिर परिचित सम्बोधन टकराएल, मुदा मन ममोसि कें रहि गेल सुकनी आ' आन दिन जकाँ "ऊ" नहि कहि सकलै।

बुढ़िया फेर चिकरलि आ' कोनो निस्तब्ध झाँखुर सँ अकस्मात गर्जन करैत बाघ जेना ककरोपर टूटि पड़ैछ तहिना... धोंछी ! निराशी !! "कहैत सुकनी क माय कूदि कए आँगन आएल आ' बुढ़ियाक झोंट पकड़ि लीड़ी-बीड़ी करए लागलि। ...एहि आकस्मिक आक्रमणक हेतु पूर्वतया असावधान बुढ़िया खसि पड़लि आ' सुकनीक माए थोड़बे काल मे लाते-मुक्के ओकरा ततेक मारलकै' जे यदि बीचमे सुकनी आबि बुढ़ियाक देह पर पड़ि नहि रहैत आ' हल्ला सूनि लोक सभ नइ जमा भ' जाइत तँ बुढ़ियाक प्राणो बाँचब कठिन छलै। बेहोश होइत बुढ़िया एतबए देखलक जे सुकनी ओकरा देहपर आबि कए पड़ि रहलैक अछि आ' बेहोसो होइत—होइत एक गोट मृदु-भावनाक कोमल स्पर्श ओकरा करेज कें स्पर्श करैत टघरि गेल। बेहोशी मे निपट्ट भेल ओकर आँखिक कोर सँ जे जलविन्दु टघरल छल ताहि मे मारिक वेदना आ' सहानुभूतिक आह्लाद कतेक-कतेक मात्रा मे छल ई कहब कठिन अछि।

कखनि लोक बुढ़िया के उठाकए आँगन दए अएलैक आ' कोना फेर उठि कए ठाढ़ भेल बुढ़िया ई सभ किछु ने बुझलकैं ओ। ने केओ ओकरा मारिक विषयमे पुछलक आ' ने ओ ओइ प्रसंग मे ककरो किछु कहलकै। हँ! सुकनीक ऊद्‌वेग ओकरा नइ लागल होइ से नहि; मुदा अनकर फुलबारीक गुलाब कतबो पसन्द रहउ, ओ अहाँक तँ नहि भए सकैछ ने! से बुढ़िया मरमोसि कए रहि गेल।...आ' काल्हि सुकनीक 'दुरागमन' थिकै। सुनलक अछि बुढ़िया लोकक मुँह!! आ' गुनुर-गुनुर होइत दू-एक गप्प ओकरा अओरो सुनबा मे अएलैक! एक तँ सुकनीक बाप ठिठरा ओहुना पेटचोनियें अछि, दोसर अइ बेर 'मियादी जर' तेना ने पकड़लकै जे तबाह भऽ गेल। तइपर सँ कतिकहरक झमारल कोनो तरहे ओ दुरागमन करबए-बाक स्थिति मे नहि छल। मुदा जमाइक जिद सँ तँ बड़का-बड़का हारि मानैत छथि, फेर ठिठरा की छल!! तएँ दिन मानि लेलकै।

बुढ़िया सुनने छलि जे बड़ फिरीसानी सँ दू-खण्ड नूआ, भरि हाथ लहठी आ' आंग पर लेल एकगोट आँगीक इन्तजाम कएने रहै, मुदा सब सँ पैघ तँ एक गोट गप्प छलै। सुकनीक सासुर सँ आएल सूति आ बरहरी के खगता पर झंझारपुर मे मड़बरियाक ओतए बन्हकी लगा देने छल ठिठरा आ' तकरा पाँच बरख भऽ गेल छलै। सूदि-मूर लगा कए पचीस गोट टाका होइत छलै आ कतबो प्रबन्ध कएला उत्तर दस गोट टाका सँ बेशी नइ जुटा सकल ओ। महाजन कोनो बरफ तँ छलै नइ जे पिघलि जतै ओकर नोर पर! से मुँहमे धान दै छल तँ लाबा भए रहल छलै। लोक, जेना कि भेल करैछ,

सहायता देबा साती गुनुर गुनुर कए रहल छल। बुढ़िया सभटा सुनने छलि।

सुकनक चेहरा बुढ़ियाक समक्ष नाचि रहल छल। तीन गोट चेहरा। एकगोट खिस्सा सुनैक लेल विहुँसैत सुकनीक चेहरा, दोसर 'बाप रे बाप' बुढ़िया मरि जेतै' कहि ओकर देह पर पड़ि रहनिहारि सुकनीक चेहरा आ' तेसर आजुक काल्पनिक चेहरा जे नोर सँ तीतल हएत मने !...आ' अकस्मात बुढ़ियाक कोंढ़ फाटि गेलै। से बिना गहनैक जेतै सुकनी आ' सासुर मे जा कए गारि-सारि सहतै। ऊँहू ! ई कोना होमए देतै गुड़की बुढ़िया !!...आँखिक नोर पोछि बुढ़िया उठलि आ' कोठिक गोरा तर सँ एक गोट केथरी बहार कएलक आ' पन्द्रह-वीस मिनटक परिश्रमक पश्चात् कर-कर करैत, मुदा नुरिया कए राखल गोर पचासेक एकटकही, दुटकही नोट बुढ़ियाक आगाँ मे पसरल छल। गनलकै बुढ़िया; अस्सीटा रुपया छलै' ! इएह छल जिनगी भरिक बुढ़ियाक जमा-जत्था। बड़ मोह सँ एक बेर बुढ़िया ओइ नोट सभ दिसि देखलक आ' फेर सभकें समटि एकटा पोटरीमे बान्हि देलकै। केथरी कें फेक देलक जेना नारिकेर बहार कए लेलाक बाद ओकर खोइया कें लोक फेकि दैत छै'।

आ' ओइ कालक गुड़की बुढ़ियाक मोनक थाह पता केओ ने लगा सकैछ। एक डेग आगू दिअए आ' एक डेग पाछू ! होइत होइत अपन मानसिक रस्साकस्सी सँ करीब दस बजे दिन मे जा' कए मुक्ति पओलक ओ ! ..नइ ! ओ जएबे करत। एकबेर जाकए कहतै जरूर। ऊँहूँ ! सुकनी कें बिना गहनाक नइ जाए देतै ओ !! . ओना दोसर मोन कहै, मुदा आइयो यदि मारए लगलौ मौगिया तखनि ? रुपैयौ छीनि लेतौ आ

मारबो करतौ। ...ने नाम, ने यश! ...मुदा हम ना' यश लेल कहाँ दै' ले जाइ' छियै'। हमरा तँ ई नइ सुनल जाइछ जे सुकनी बिना गहनाक जेतै'। तएँ दै ले जाइ छियै ई रुपया जे बन्हकी छोड़ा अनतै' आ' एक-दूगो नवो गहना कीनि देतै। ...मोह-पक्षक आगू तर्क-पक्षकें पराभूत होमए पड़लैक।

खुट-खुट करैत बुढ़िया फेर ओहि बाटें जा रहल छल जाहि बाटें ओइ दिन गेल छल। आइयो ओहिना कनखी-मटकी आ' छोर बिजकावलिक संग फदका चलि रहल छल; मुदा सभटा बुझियो कए विदेह जकाँ निर्विकार भेलि बुढ़िया आगू बढ़ि रहल छलि। एक आ' मात्र एक लक्ष्य ओकरा समक्ष छलै' जे सुकनीकें गहना बेगरि ओ सासुर नहि जाए देतै।...कोनो महान् भक्त जेना भगवानक अस्तित्व मे अपन अस्तित्व कें तिरोहित कए दैछ तहिना आइ गुड़की बुढ़िया सुकनी कें भए रहल छलि !!!

आ'—साँझ मे जखनि आगाँ आगाँ खुट-खुट करैत गुड़की-बुढ़ियाक पाछू-पाछू गहनाक पोटरी नेने ठिठरा झंझारपुर सँ घुरल तँ धूमनक सुगन्धि जकाँ गाम भरि मे ई गप्प पसरि गेल। खास सुकनीक माइए ई गप्प सभ कें कहि अएलैक—"वज्जर खसए हमरा पर !...लोक अनेरे बुढ़िया कें डाइन कहै छै !..."

मुदा गुड़की बुढ़िया कें लोक भवनाक एहि परिवर्त्तनक कोनो परवाहि नहि छलै। ओ एहीटा लऽ कए संतुष्ट छलि जे सुकनी बेगरि गहनाक सासुर नइ जेतै' आब आ' संगहि सुकनीक बिदा हेबाक काल केओ ओकरा घार मिलेबा सँ रोकि नहि सकत।

'गुड़ गुड़-गुड़' —बुढ़ियाक हुक्का गुड़गुड़ा रहल छल आ' सुकनी आइ अन्तिम बेर बुढ़िया सँ खिस्सा सुनि रहल छलि !!

✦ ✦

समाधि बजैत अछि

श्री शंभुनाथ बलियासे 'मुकुल'

सुविधा-जनक आवागमनक रस्ता समाप्त भऽ गेल अछि। किन्तु अहाँ किछु आर आगाँ एकपेरियासँ बढ़ि जाउ। आगाँ एकटा गाछ हरियर आ पीयर पातसँ भरल-पुरल भेटि जायत। गाछक फेड़ आ धड़क विशालता देखि सहजे अनुमान भऽ जायत जे ई गाछ अजुका नहि, प्राचीन कालक थिक। ओतऽ एक दिस हरियर ओ मोलायम घासक मखमली गद्दी बिछाओल सेहो भेटत !

ओहि गद्दीपर अहाँ किछु कालक लेल बैसि जाउ। चारू दिस नजरि फेरलासँ भाँय-भाँय लागत। कत्तहु कोनो मानवक दर्शन नहि होयत। एहन दुर्गम स्थानमे अनायास क्यो आबि सकैत छैक, एकर कल्पनो अहाँ नहि कऽ सकब। बूझि पड़त दूरमे मात्र एकटा स्तूप अछि जकरा वेदी अथवा समाधि कहि सकैत छी। जिज्ञासा होयत—ककर समाधि थिकैक ? संगहि संग सोचऽ लागब—ई ककर स्मृतिमे एतेक दिनसँ विविध प्रका-

रक घात-प्रतिघात सहैत आइ धरि बैसल अछि ? ककर ई समाधि थिकैक ? किन्तु कहनिहार क्यो नहि भेटत। ओकर सम्बन्धमे जनतब रखनिहार लोक आइसँ कैक सय वर्ष पूर्व जीवित छलाह। समाधि पर कतहु किछु लिखलो नहि भेटत जाहि सँ जनतब संभव भऽ सकैत छल। मुदा ई सत्य अछि जे समाधि पर कहियो-कहियो दीप जरैत अछि तकर चिन्ह अहांकेँ स्पष्ट बूझि पड़ि जायत।

ई निश्चित अछि जे ओ अज्ञात, आकर्षणहीन समाधि-स्थल अहांकेँ बड़ प्रिय लागत। मनमे होयत—जाहि व्यक्तिक ई समाधि थिकैक तकर संग अहांकेँ कोनो आत्मीयता छल। आर अहां समाधिक निकट बैसि आत्मीय सभक स्मरण करऽ लागब—जकरा अहां प्रेम करैत छलहुँ आ जे अहांकेँ प्रेम करैत छलाह। सोचबाक एहन क्रममे राति भऽ जायत, किन्तु ओहि ठामसँ कात जयबाक अहां कल्पनो नहि कऽ सकब।

दोसर दिन अहां स्वतः ओहिठाम उपस्थित भऽ जायब। एवम् प्रकारसँ नित्य ओहिठाम जयबाक अभ्यास भऽ जायत। भऽ सकैत अछि जे ओतऽ किछु नहि रहय, किन्तु नहि रहलोमे अहांकेँ विचित्र आकर्षण बूझि पड़त।

एकदिन गाछक पात सभसँ नुकाइत इजोरिया आबिकऽ पड़त ओहि समाधि पर। सम्भव थिक जे एहन सौन्दर्यमय दृश्य देखैत-देखैत अहांकेँ नीन भऽ जाय आ अहां ओहि घासक मखमली गद्दी पर सूति जाइ। फेर अकस्मात किछु कालक बाद नीन टूटि जायत आ अहां दौड़ि जायब एकटा युवतीकेँ आकर्षक रूपमे उपस्थित देखि !

युवती एकटा घृतप्रदीप हाथमे लऽ जेना कोनो अदृश्य स्थान सँ अवतरित भऽ गेल अछि। ओ प्रदीप लेने निर्निमेष भावसँ समाधि के देखैत रहतीह। पुनः तृषातुर भावसँ किछु कालक बाद प्रदीप समाधि पर राखि उदास भाव सँ देखैत रहतीह। निर्वाक् शान्त—जेना सुदूर गगनक देदीप्यमान नक्षत्रक दिस लोकसभ देखैत रहैत अछि।

ई युवती के थिक ? अहाँक आश्चर्य बढ़ि जायत ओकर पहिरना देखि। कोनो राजपूत रमणी के यदि अहाँ देखने छी तँ ओकरा पहिरना सँ एकर पहिरना मे बहुत किछु साम्य बुझि पड़त।

किछु कालक बाद युवती अहाँक निकट आबि बैसि जायति। एहन आश्चर्यजनक परिस्थिति देखि अहाँ अवाक् भऽ जायब। किछु काल धरि की बाजी आ की करी ई अहाँ के नहि फूरत। किन्तु युवती अहाँक मनोदशा देखि स्वयं जिज्ञासा करतीह—"अहाँ नित्य एहिठाम किएक अबैत छी ?"

अज्ञात कुल-शीला युवतीक मुख सँ एहन प्रश्न सुनि किछु समय अहाँके आत्मस्थ होबऽ मे लागि जायत। ओकर प्रश्नक कोनो उत्तर बिना देने अहाँ परिचय जनबाक लेल व्यग्र भऽ जायब। युवती बाजि उठतीह—"हमर परिचय जनबाक इच्छा आइ धरि क्यो नहि कयलक। अहाँ परिचय जुनि प्राप्त करू। प्रत्युत हमरा सँ एकटा खिस्सा सुनि लियऽ।" आर ओकर आग्रह के कोनो खास कारण सँ अहाँ टारि नहि सकब।

युवती कहतीह—"पृथ्वीराजक संग जयचंद के शत्रुता छलैक। पृथ्वीराज के परास्त करबाक हेतु जयचंद मुहम्मद

गोरी केँ बजौने छल। मुहम्मद गोरीक संग पृथ्वीराज केँ दू बेर युद्ध भेल छलैक। युद्धक कथा अहाँ इतिहास मे पढ़ने होयब। मुदा पृथ्वीराज केँ विजयी बनयबा मे जे व्यक्ति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आ जोखिमबला काज कयने छलैक तकर नाम इतिहासक कोनो पृष्ठ पर आइ धरि अंकित नहि भेलैक अछि। आश्चर्यक बात नहि, एहन बहुत व्यक्ति सभक नाम इतिहास मे नहि रहैत छैक।

प्रथम युद्ध चलि रहल छलैक। दुनू दलक सैनिक-छावनि सभ पड़ि गेल छल। दलक दल सैनिक सभ आबि आबि कऽ जमा भऽ रहल छल। मुदा वास्तविक युद्ध आरम्भ नहि भेल छलैक। कारण एक पक्ष दोसर पक्षक सैन्य-शक्तिक अन्दाज नहि कऽ सकल छल। कौन दिस सँ कोना आक्रमण कयला सँ विजय प्राप्त भऽ सकैत अछि एकर मंत्रणा दुनू शिविर मे चलि रहल छलैक। सम्पूर्ण नगर युद्धक वातावरण मे माति गेल छलैक। सभ गोटे महाराज पृथ्वीराजक विजयक कामना कऽ रहल छलाह।

ठीक एहि समय मे भरत सिंह नगर आपस आबि गेलाह। हुनक घोड़ा एकटा खोपड़ीक दरबज्जा पर आबि कऽ रुकि गेल। ठक्...ठक्...ठक्। दरबजाक केबार खोलि जयन्ती विस्मृत भऽ गेलीह। दुनूक आँखि मे आनन्दक रेखा स्पष्ट दृष्टिगोचर भऽ रहल छल। किछु काल दुनू स्तब्ध मौन रहि गेलाह।

भरत सिंह आ जयन्तीक शैशव एवं किशोर जीवन संगहि संग बीतल छल—खेल आ आमोद-प्रमोद मे। केहन आनन्दमय

किन्तु भयानक ओ दिन सभ छल। बाद यौवन-काल आबि गेल। जयन्तीक पिता सोचऽ लगलाह जे आब एकरा ककरो हाथ मे दऽ देबाक चाही। अतएव ओ सुयोग्य पात्रक खोज मे भ्रमण करऽ लगलाह। ई सभ देखि जयन्तीक मुखमण्डल पर जेना मेघक दल उतरि गेल होअय। कन्या कोन बातक लेल चिंतित भऽ गेल छथि, जयन्तीक माय सभ बुझैत छलीह। ओ जयन्तीक पिता सँ ओ सभटा बात कहि देलथिन।

मुदा भरत सिंह धन एवं मातृ-पितृहीन छलाह। एहन पात्रक हाथ मे जयन्ती सदृश कन्या सुपुर्द करब सम्भव नहि छल। तेँ जयन्तीक पिता एक दिन भरत सिंह केँ बजाय कहलनि—'खेल धूप मे जीवनक बहुत समय समाप्त भऽ गेल भरत! आब कोनो काज-धन्धाक दिस ध्यान देबाक चाही।

भरत एतबे मे सभ किछु बुझि गेल छलाह। ओ एक दिन धनोपार्जनक हेतु अनचिन्हार पथमे निकलि गेलाह। विदाइ-बेरमे जयन्ती ई स्पष्ट कहि देने छलीह जे ओ अपन भरतक हेतु प्रतीक्षा करैत रहतीह।

आइ एक वर्षक बाद भरत अपन नगर आयल छलाह। जयन्ती प्रसन्न मुद्रामे भरत केँ भीतर लऽ गेलीह। जयन्तीक पिता पृथ्वीराजक दूरस्थ सैन्य शिविरमे छलाह। दू मास पूर्व माँ स्वर्गवासिनी भऽ गेल छलथिन। एकान्त गृह। निस्तब्ध राति।

आकस्मिक मिलनक विस्मय समाप्त भेलाक बाद भरत कहऽ लगलाह—"जनैत छी जयन्ती! आब हम तेहन दरिद्र नहि छी। बहुत दिन बौआइत रहलहुँ। मुहम्मद गोरीक ओहिठाम काज भेटि गेल अछि। सेनापतिक काज। पैसा आ सम्मान...।'

ई वाक्य सुनैत घृणा सँ जयन्तीक भ्रृकुटि सिकुड़ि गेलैक। ओ व्यंग्य करैत बजलीह—"बड़ सम्मानक काज कऽ रहल छी ! शत्रुक अधीन भृत्यक काज !!"

अहाँ जनैत नहि छी जयन्ती, एहि युद्ध मे मुहम्मद गोरीक विजय भेलाक बाद भरत एहि ठामक राजा बनताह आ रानी बनतीह जयन्ती, सुनलहुँ ? गोरीक संग सभ बात भऽ गेल अछि। तेँ सेनापतिक पहिरना त्यागि साधारण व्यक्तिक बेषमे एहि ठाम उपस्थित भेल छी—पृथ्वीराजक सैन्य-शक्ति आ प्रस्थान क निश्चित समय जनबाक हेतु। आशा अछि, अपन उज्ज्वल भविष्यक हेतु अहाँ..........।

जयन्तीं सँ एहि बेर मौन नहि रहल गेलनि। ओ बाजि उठलीह—"अहाँ भयानक गलती कऽ रहल छी भरत ! शत्रुक प्रपंच मे पड़ि अहाँ देशक सर्वनाश केँ बजा रहल छी। विजयी भेलाक बाद गोरी स्वयं एहि ठामक राजा बनत। ओ अहाँ केँ पद-दलित कऽ देत। अहाँ दुर्बुद्धि त्यागि दियऽ।"

"नहि, ई कदापि नहि होयत। पैसा पर्याप्त नहि भेला सँ हमर अभीष्ट सिद्ध नहि होयत जयन्ती ! बहुत प्रकारक समाचार सुनि चुकल छी। एहि ठाम सँ आपस गेलाक बाद एहि बेर......।"

भरत केँ कोनो प्रकारेँ बुझयबा मे जयन्ती सफल नहि भऽ सकलीह। आन्तरिक वेदना सँ हुनक चान सन मुखमण्डल मलिन भऽ गेलनि। सोचऽ लगलीह—ई की वैह भरत थिक जकरा एतेक प्रेम करैत छलहुँ। सोचबा काल मे हठात् ओकर भौंह तना गेलैक।

विभिन्न प्रकार सँ मान-खातिर करैत जयन्ती शत्रुपक्ष क बहुत बातक जनतब प्राप्त कऽ लेलनि। बादमे भरत सँ बजलीह—"प्रियवर! अहां किछु काल धरि आराम करू, थाकि गेल छी। आ हम तावत भोजन क व्यवस्था कऽ रहल छी। एतवा कहैत जयन्ती दोसर कोठरी चलि गेलीह।

भरत विभिन्न प्रकार क उज्वल भविष्य क कल्पना करैत ओहीठाम आराम करैत रहलाह। किछु काल धरि प्रतीक्षा कयलाक बादो जखन जयन्ती नहि उपस्थित भेलीह तँ ओ बड़ चिन्ता मे पड़ि गेलाह। सोचऽ लगलाह—जयन्ती कतऽ चलि गेलीह। एवम् प्रकारे बहुत राति बीति गेल। अपन शिविर मे आपस जायब सेहो संभव नहि छलनि। कोठली सँ बाहर आबि देखलनि। ने घोड़ा आर ने जयन्ती। भयभीत एवं आशंकित भऽ एक कोन मे नुका रहलाह।

जयन्ती? जयन्ती कतऽ? जयन्ती तखन पृथ्वीराज क शिविर मे अपन पिताक संग वार्ता कऽ रहल छलीह। ओ शत्रु पक्षक जतेक समाचार वार्तालाप क क्रम मे भरत सँ पाबि सकल छलीह सभटा पृथ्वीराज कें कहि देलथिन।

पृथ्वीराज एहन कार्य सम्पन्न करबाक हेतु अपन गरदनि सँ मोती क माला उतारि जयन्ती कें दऽ देलथिन। पृथ्वीराज क सैनिक निश्चित योजनानुसार शत्रुदलपर आक्रमण करबाक हेतु प्रस्थान कऽ देने छल आ एक दल भरत कें पकड़बाक हेतु बिदा भऽ गेल छल।

जयन्ती आपस आबि गेलीह। हुनक आँखि सँ अविरल

अश्रुक धारा प्रवाहित भऽ रहल छलनि। मोतीक माला रास्ते मे टूटि कऽ धूलिकण मे मिलि गेल छलनि।

युद्ध क समाचार इतिहास क पृष्ठपर अंकित अछि जे कोनो प्रकारें भरत कें जीवित अवस्था मे उपस्थित करबाक आदेश पृथ्वीराज क छलनि, मुदा उपस्थित कयल गेल ओकर मृत-रक्ताक्त शरीर! पृथ्वीराज जयन्ती कें बजा पठौलनि। जयन्ती क पहुँचलाक बाद पृथ्वीराज बाजि उठलाह—"बहीन! ई विजय मात्र अहांक कारण सँ भेल अछि। जे देश-द्रोही सम्पूर्ण देशकें नष्ट करबाक हेतु प्रस्तुत छल संयोग सँ ओकर मृत्यु भऽ गेलैक। अपराध क समुचित दण्ड भेटि गेलैक। आब कहू—अहां कें कोन पुरस्कार सँ पुरस्कृत कयल जाय?"

प्राणप्रिय भरतक शव देखि आ पृथ्वीराजक उक्ति सुनि जयन्ती कनियों विचलित नहि भेल छलीह। बाहर सँ ओ निश्चित रूपें अविचलित छलीह, किन्तु अन्तर सँ वेदना-मिश्रित विचित्र भाव सँ अभिभूत छलीह।

जयन्ती बाजि उठलीह—'कोनो पुरस्कार प्राप्त करबाक कामना हमरा नहि अछि महाराज! मात्र एकटा प्रार्थना अछि—कृपा-पूर्वक भरत क मृत शरीर अभीष्ट स्थान धरि लऽ जयबाक आज्ञा देल जाय।"

जयन्ती क मुख सँ एहन वार्त्ता सुनि पृथ्वीराज आश्चर्यित भऽ गेलाह। ओ जयन्ती क पिता क दिस मुँह करैत बाजि उठलाह—"ई निर्बोध बालिका की कहि रहल अछि?"

जयन्तीक पिता उत्तर मे बाजि उठलाह—"महाराज! जयन्तीक प्रार्थना स्वीकार कयल जाय।"

पृथ्वीराज बजलाह—“मुदा हम वड़ असमंजसमे छी—भरत जयन्तीक के छलैक ?”

—“ई सभ नहि सुनल जाय, सैह उचित होयत महाराज !”

—“बेस ! तखन राजाज्ञा अछि, जयन्तीक इच्छा पूर्ण कयल जाय।”

दोसर दिन सन्ध्याकाल धरि भरत सिंहक समाधि निर्मित भऽ गेल। वैह ई समाधि थिक। ओही राति ई नीमक गाछ रोपल गेल छलैक।

एतवा कहैत युवतीकें बकौर लागि जयतैक। एहन समयमे अहाँ युवती सँ पूछि बैसब—“मुदा, अहाँ के थिकहुँ ई किएक ने कहलहुँ ? के थिकहुँ अहाँ ?”

युवती एकदम मौन भऽ जयतीह आ अहाँ निर्निमेष भावसँ ओकरा तकैत रहब। ओकर मुँह दिस तकैत-तकैत अहाँक आँखि पथरा जायत। आत्मस्थ भेलाक बाद जखन अहाँक आँखि खुलत तँ ककरो कतहु नहि देखि सकब। तखन अहाँक मुँह सँ अनायास बहरा जायत—“ई समाधि बजैत अछि।”

कुपुरुष क खोज

सुश्री इला रानी सिंह

बहुत दिन पूर्वक घटना थीक। रामचन्द्र जनकपुर गेल छलाह। सारि-सरहोजिक दुलार और सासु-ससुर क सद्भाव हुनका मोहित कए लेलकन्हि। मिथिला क मखानक खीर, भेंटक लावा, अरिकोंचक साग, तिलकोर क तरल और बड़ी, बड़ एवं बजकाक कथे जुनि पुछू। ई सब अयोध्या मे कतय पवितथि ? ताहूपर नित-नित ललना सभक मधुर गीत सुनै लेल भेंटन्हि— उचिती, मिनती, जोग, कोहबर, परातकाली और जानी की-की दन। नित्य नाना कौतुक, नित्य नाना रस-प्रसंग। रामचन्द्र अयोध्या क सुधि बिसरि गेलाह। सासुरक माया हैतहि छैक तेहने ! सप्ताह पर सप्ताह और मास पर मास बितय लागल, किन्तु राम सासुर सँ जैबाक नामहि नहि लेथि।

महाराज दशरथ कें भेलन्हि भारी चिन्ता। ओ देखलन्हि जे ई तँ भारी अन्हेर भेल। मिथिला क भूमियें तेहन लोभा-ओन होइ छैक जे राम कतहुँ घर-जमैया ने भए जाथि। ओ

कुलगुरु वशिष्ठ सँ पुछलथिन्ह। वशिष्ठ क सम्मति सँ एक कूट पत्र पठाओल गेल, राजा जनक क ओहि ठाम। पत्र मे चारि वस्तुक मांग कएल गेल छलैक। जनक सँ अनुरोध भेल छलन्हि जे एक कुपक्षी, एक कुभोज्य (कदन्न), एक कुपात्र एवं एक कुपुरुष पठा देल जाय।

जनक जी पत्र पावि सोच मे पड़ि गेलाह। ओ मंत्री कें बजा आदेश देल जे सब वस्तु क संग्रह हो। एतवा कहि राजा जनक आन-आन महत्त्वपूर्ण काज मे संलग्न भए गेलाह। एमहर कुपक्षी क खोज होमय लागल। लोग सब बाजल जे कुपक्षी क रूप मे कौआ कें ग्रहण करबाक चाही। कौआ बजाओल गेल। मंत्री महोदय आज्ञा देलथिन्ह जे तों जाह अयोध्या दिस, एहि ठाम तोहर कोनो काज नहि। तों कुपक्षी छें, तैं तोहर बजाहटि अयोध्या मे भेल छौक। कौआ बाजल—मंत्री जी, हम कुपक्षी कोना छी ? हम तँ भोरे-भोर उठि कए लोक सब कें जगाबैत छी, गन्दगी सब साफ करैत छी और रोग फैला-वैवाला कीड़ा-मकोड़ा सब कें मारि-मारि कए खा जाइत छी। हमरा पंडित लोकनि भविष्यक ज्ञाता कहैत छथि। हम कुपक्षी कोना भेलहुँ !

मंत्री पुछलथिन्ह--"तखन कुपक्षी के थीक ?

कौआ बाजल—"कुपक्षी अछि उल्लू। ओ काजक बेर (भरि दिन) नुकाएल रहैत अछि। ओ सभक खाली मुहें दुसैत रहैत अछि। समाजक कोनो काज नहि करैत अछि। मंत्री मानि गेलाह।

फेर कुभोज्य अन्नक खोज होमय लागल। लोग मरुआक नाम लेलक। मरुआ बेचारा बजाओल गेल। ओकरो तेहने आज्ञा भेटलैक।

मरुआ बाजल—हम कदन्न नहि छी। हम तँ गरीब लोक-निक एकमात्र सहारा थिकहुँ। हमरा नहि रहने तँ मिथिलाक लाख-लाख जनता अन्न बिना कलहन्त कए कए मरि जायत। हम मालक संग खैबा मे बड़ सोन्हगर लगैत छी। सहजहि उपजि जाइत छी—ऊसरो जगह मे। हमरा तैयारहु करबा मे बेसी समय नहि लगैत छैक। लोग धड़ द' कूटि-पीसि कए खा लैत अछि। हमरा कोना कुभोज्य मानल जाइत छैक ?

मंत्री बजलाह—तखन कुभोज्य कोन अन्न ?

मड़ुआ बाजल—कुभोज्य अछि कुशियार। ओकर उप-जायब, जोतब, पेड़ब सब कष्टकर। ओकर शक्कर-चीनी सँ बनल मिष्टान्न आदि गरीब लोकनि छूबियो धरि नहि सकैत अछि। मंत्री मानि गेलाह और कुसियारहि कें अयोध्या पठे-बाक निर्णय भए गेल।

आब कुपात्रक खोज होमय लागल। लोक सभक सुझाव पर खापड़ि कें बजाओल गेल। मंत्री खापड़ि कें कहलथिन्ह जे तों कुपात्र छें। तँ तोरा मिथिला छोड़ि अयोध्या जाय पड़तौक। राजा दशरथ कें कुपात्रक प्रयोजन छन्हि !

खापड़ि बाजल—हम कुपात्र कोना छी ? हमरा नहि भेने कोनो चीज भूँजल कोना जायत ? भुंजे-फुटहा खा कए तँ गरीब गुरबाक गुजर होइत छैक। हमरा कारी खटखट्ट देखि कए कुपात्र जुनि बुझल जाय सरकार। हम बड़ काजक वस्तु छी !

मंत्री पुछलथिन्ह—तखन कुपात्र के थीक ?

खापड़ि बाजल—कुपात्र थीक कलालीक बौड़ुकी (पियाला)। ओ दारू-ताड़ी पिवाक काज मे अवैत छैक। लोक सब कें धर्म-च्युत करैत अछि, बौड़ा दैत अछि। ओकरहि अयोध्या पठा देल जाय। मंत्री मानि गेलाह।

आब कुपुरुषक खोज होमय लागल। लोग सभ बाजल जे नट सँ बढ़ि कए कुपुरुष और के भए सकैत अछि ? नट बजा-ओल गेल ! ओकरा आज्ञा देल गेलैक जे तों कुपुरुष छें। तैं तों जो अयोध्या दिस। राजा दशरथ कें तोहर काज छन्हि।

नट बाजल—हम कुपुरुष कोना ? हम तँ नाना कौतुक देखा-देखा कए लोक-रंजन करैत छी। अनेक प्रकारक कसरत कए शरीर कें लचकगर बनौने रहैत छी। कतेक प्रकारक अभि-नय सेहो करैत छी। हमरहि पूर्वज छलाह ऋषि भरत।

मंत्री बजलाह—तखन तोंही बाज जे कुपुरुष के ?

नट बाजल—कुपुरुष तँ ओ जे सासुर मे रहि कए दिन काटय। की जनकपुर मे एहन कोनो लोक नहि अछि जे सासुर मे रहैत हो ?

ई उत्तर सुनितहि सब दंग रहि गेलाह। मन्त्रिपरिषद् तँ अवाक्। राम कें सेहो समझबा-बुझबा मे भांगठ नहि रहि गेलन्हि, मधुश्रावणी लग मे रहितहुँ और सासु-सरहोजिक आग्रह रहितहुँ बेचारे पराते उठि-पुठि कए अयोध्या दिस विदा भेलाह।

—:०:—

माटिक सुराही

उदय सिंह

मैथिल लोकनि कुशाग्र बुद्धि क लेल प्रख्यात होइत छथि। ताहू मे महाकवि कालिदास क त कथे जुनि पूछू। सामान्य मैथिल परिवार मे जन्म-ग्रहण कए ई ततेक यश एवं प्रतिष्ठा अर्जन कएलन्हि जे कोनो लोकक लेल स्पृहा क विषय भ' सकैछ।

यद्यपि हुनक प्रामाणिक इतिवृत्त एखनि धरि उपलब्ध नहि भेल छैक तथापि हुनका विषय मे नाना जनश्रुति वा किंवदन्ती प्रचलित अछि। तदनुसार कालिदास छलाह कुरूप। मुख पर कान्ति तथा प्रखर प्रतिभा क चिन्ह, लेकिन वर्ण कारी एवं मुखक आकृति बेडौल। हुनक यश सुनि-सुनि देशाक कोन-कोन सँ लोक हुनक दर्शनार्थ अबैत छल। कविक काव्य-सौष्ठव देखि लोकक मन मे ई धारणा होइत छलैक जे ओ निश्चय अत्यन्त रूपवान् हेताह। किन्तु कालिदास कें देखला उत्तर सब निराश भ' जाइत छल। एकर दुःख महाराज विक्रमादित्यहुक मन मे छलन्हि। अपन दरबार क नवरत्न मे श्रेष्ठ रत्न क कुरूपता पर ओ क्षुब्ध छलाह। कैक बेर ओ कालिदास कें इयेह ल' कए खौंझा चुकल छलाह! अवसर भेटितहि ओ चुटकी लेबा सँ बाज नहि अबैत छलाह।

एक दिन दुपहर कें अलसाएल तथा अर्द्ध-शयन-रत अवस्था मे महाराज बजलाह—"कालिदास, अपनेक वास्ते हमरा दुःख एवं सहानुभूति अछि।" कवि बुझितहुँ अनजान जेकाँ पुछल-थिन्ह—"से की महाराज ?" "अपनेक सब किछु नीक, लेकिन ई रूपे टा ......! दूर-दूर सँ अबैवला अपनेक भक्त सब अपने कें देखि कए उदास भए फिरि जाइत छथि।" महाराज बजलाह। कवि बजलाह, "से त सत्यहि चिन्ता क बात सरकार! भग-वान् क देल एहि चेहरा कें बदलि सकब जौं संभव रहितैक त हम अवश्यहि बदलि लितहुँ।"

तावत् कथे प्रसंग मे राजा कें पियास लागि गेलन्हि। कक्ष एकदम एकान्त छलैक। एहि दू गोटेक अतिरिक्त आन क्यो नहि छल। कवि सोना क गिलास मे सुराही सँ ठंढा जल ढारि कए राजा कें देलथिन्ह। दू-चारि घोंट पीबि राजा लगे मे मंचिका पर गिलास ध' देलथिन्ह, जाहि सँ पुनः पियास लगला उत्तर कवि कें कष्ट नहि देबऽ पड़य। तत्पश्चात् बहुत देर धरि नाना प्रकारक गप्प चलैत रहल। राजा कें पुनः पियास लागि गेलन्हि। गिलास उठा, एकहि घोंट पीलन्हि कि मुख विकृत भ' गेलन्हि। सोनाक गिलास क जल एकदम गरम भ' गेल छलैक। कवि बुझि गेलाह जे हिनका शीतल जल चाही।

कवि कें नीक सुयोग भेंट गेलन्हि। ओ बिहुँसैत बजलाह, "देखलियैक महाराज, तुच्छ माटिक करिया सुराही सँ देल जल केहन शीतल एवं तृप्तिदायक लागल, किन्तु सोनाक बासन मे राखल पानि कंठ सँ नीचा नहि उतरि सकल।। तैं बुझल जाव जे भीतर क सद्गुण बढ़िया वा रूपक बाहरी चाकचक्य ?

—:o:—